दिव्य जीवन

Vol. XXV	अगस्त २०१४	No. 5

उपनिषद्–सुधा बिन्दु

हन्ता चेन्मन्यते हन्तुँ हतश्चेन्मन्यते हतम्।
उभौ तौ न विजानीतो नायँ हन्ति न हन्यते॥

(कठोपनिषद् : १/२/१९)

(यमराज कहते हैंह्नह्न) ''यदि कोई मारने वाला व्यक्ति (भ्रमवश शरीर को ही आत्मा मानने के कारण) सोचता है कि 'मैं मारता हूँ' और यदि कोई मारा जाने वाला व्यक्ति (इसी भ्रम के कारण) अपने को मारा गया समझता है, तो वे दोनों ही आत्मतत्त्व को नहीं जानते (क्योंकि आत्मा न किसी को मारता है, न किसी के द्वारा मारा जाता है)।''

पूर्व-अंक से आगे :

शिवानन्दस्तोत्रपुष्पांजलिः

(श्री स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती)

अत्यन्तनिर्मलात्मानं प्रत्यग्रप्रतिभान्वितम्।
श्रुत्यन्तबोधवाराशिं शिवानन्दं गुरुं भजे ।।४

मैं अपने गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की वन्दना करता हूँ जिनका मन अत्यन्त पवित्र है, जिनकी बुद्धि अतीव कुशाग्र है तथा जो वेदान्त-ज्ञान के सागर हैं ।

सर्वलोकसमाराध्यं शर्वनिर्लीनमानसम् ।
शर्वरीशाननं वन्दे शिवानन्दं महामुनिम् ।।५

जो समस्त विश्व द्वारा वन्दित हैं, जिनका मन सदैव भगवान् शिव में लीन है तथा जिनका मुख पूर्णचन्द्र सम विभासित है, उन महान् सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की मैं आराधना करता हूँ ।

वीतान्तसंसारगदार्दितानां
वेदान्तबोधौषधदानदीक्षम्।
वन्दारुमन्दारममन्दकीर्तिं
वन्दे शिवानन्दमहामुनीन्द्रम्।।६

मैं महामुनीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज को साष्टांग प्रणिपात करता हूँ जो भवरोग से पीड़ित मनुष्यों को वेदान्त-ज्ञान रूपी औषधि प्रदान करने में सतत संलग्न हैं, जो अपने प्रणत-जनों के लिए दिव्य कल्पवृक्ष हैं तथा जिनका उज्ज्वल यश समस्त विश्व में व्याप्त है ।

(क्रमशः) (अनुवादिका : सुश्री नीलमणि)

पूर्व-अंक से आगे :

''मैं इसका उत्तर दूँ?''

(परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज)

४१

यदि किसी उन्नत योगी को कोई गम्भीर रोग हो जाये तो क्या उसका मानसिक सन्तुलन बिगड़ जाता है? ऐसी परिस्थिति में उसकी क्या प्रतिक्रिया होती है?

नहीं, कभी नहीं! यदि देह सम्बन्धी अथवा शारीरिक कष्ट सम्बन्धी कोई विचार भी उसे आता है, या कुछ भी ऐसा होने से जो देह-मन के लिए सहन करना कठिन हो, उसे शान्ति से सह नहीं पाता, तो याद रखें, वह उन्नत योगी अथवा सन्त या संन्यासी नहीं है। वह व्यक्ति, जिसे अपने या अपने आस-पास के अथवा संसार के सम्बन्ध में कोई विचार नहीं आते, वहह्नह्नजो निज आत्मा में अथवा अपने प्रियतम इष्टदेव में, या अपने दयालु गुरु में ही ध्यानस्थ रहता है, और जो किसी भी प्रकार की सीमित वस्तु-परिस्थिति एवं व्यक्ति के प्रति पूर्णतया विस्मरणीय रहते हुए स्वयं का सम्बन्ध उस असीम, निरामय, अप्रतिबन्ध, सर्वव्यापक ब्रह्म से ही बनाये रखता है, वही वास्तविक एवं उन्नत योगी अथवा भक्त या ज्ञानी है, अन्य दूसरा नहीं।

अपने रोग के प्रति अथवा सीमित, नश्वर शरीर सम्बन्धी या समस्त संसार सम्बन्धी उसके उपेक्षापूर्ण भाव की समानता सारे संसार में किसी के साथ भी नहीं की जा सकती। वह सदैव निज आत्म-स्वरूप में स्थित रहता है तथा किसी भी प्रकार की परिस्थिति में अपना सन्तुलन बिगड़ने नहीं देता। वह इस बात में दृढ़ विश्वास रखता है कि मृत्यु प्रत्येक की प्रतीक्षा में है और वह किसी-न-किसी समय आ कर प्राण हर लेगी; तथा यह भी कि शोक, मोह, क्षुधा, पिपासा, जरा और मृत्यु नामक षड् उर्मियाँ प्राणी मात्र में समान हैं, केवल मानव में ही नहीं। और यह भी कि आत्मा अमरणशील, अनश्वर और शाश्वत ब्रह्म ही है। अत: कठिन-से-कठिन परीक्षा की घड़ियों में भी वह मन से अशान्त अथवा विकल नहीं होता।

४२

क्या श्रीमद्भगवद्गीता सचमुच ही युद्धभूमि में भगवान् श्री कृष्ण के मुख से उच्चरित की गयी थी अथवा यह कवि की काल्पनिक गाथा है?

हाँ! इसमें किंचित् भी सन्देह नहीं है। यह सचमुच युद्धभूमि में भगवान् श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया उपदेश है। यह केवल चिरंजीवी व्यास जी की काल्पनिक कृति मात्र नहीं है। इन दो श्लोकों को देखें, जो गीतामाहात्म्य में आपको मिलेंगे :

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता।।

भारतामृतसर्वस्वं विष्णोर्वक्त्राद्विनिःसृतम्।
गीतागंगोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।।

गीता मानव कृति नहीं है। बौद्धिक तर्क-वितर्क को छोड़ कर इस बात में विश्वास रखें। भगवान् श्री शंकराचार्य और रामानुज जी, जिन्होंने गीता पर भाष्य रचे हैं, को स्मरण करें। भगवान् श्री कृष्ण ने अपनी एक भक्त लीलाबाई से स्वयं कहा है कि वह स्वयं और गीता एक ही हैं, दोनों में कोई भेद नहीं है, एक की पूजा करने से दूसरे की पूजा हो जाती है। गीता के अठारहवें अध्याय के ६८ से ७१ तक के श्लोक

ध्यान से पढ़ें, इससे आपके हृदय में पावन ग्रन्थों के प्रति श्रद्धा और विश्वास उत्पन्न होगा।

४३

कृपया आप कोई ऐसे प्रभावशाली ढंग एवं उपाय बतायेंगे जिनके द्वारा काम-शक्ति रूपान्तरित हो सके तथा उसका ओज में उदात्तीकरण हो जाये?

काया-वाचा-मनसा कठोर संयम का पालन करें, निरर्थक और व्यर्थ चिन्तन छोड़ दें। हर अवस्था एवं परिस्थिति में मन का सन्तुलन बनाये रखें और भगवान् का चिन्तन करें। शीर्षासन, सर्वांगासन तथा ऊर्ध्व पद्मासन करें, साथ ही विपरीतकरणी मुद्रा करें। सतत भगवन्नाम-स्मरण, सतत जप, ध्यान, गीता अध्ययन, भागवत तथा रामायण जैसे सद्ग्रन्थों का पाठ करते रह कर अपनी वीर्य-शक्ति की रक्षा करें। विवेक और वैराग्य (सांसारिक विषयों में आसक्ति) को विकसित करें। जैसे-जैसे वैराग्य में वृद्धि होगी, वैसे ही साथ-साथ वीर्य-शक्ति को सुरक्षित रखने के प्रयास सहज हो जायेंगे। जितना ही वीर्य सुरक्षित होगा, उतनी ही शक्ति ओज में रूपान्तरित होगी; जिसका अर्थ हैद्दद्दशारीरिक, मानसिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक शक्ति का प्रचुर मात्रा में होना तथा शीघ्रतम उन्नत अवस्था को प्राप्त होना। प्राणायाम शारीरिक एवं मानसिक संयम बढ़ाने में बहुत सहायता करता है। मन पर नियन्त्रण का अर्थ हैद्दद्दप्राण-शक्ति पर नियन्त्रण तथा वीर्य नष्ट होने पर नियन्त्रण। इस वीर्य-शक्ति पर नियन्त्रण हो जाने का अर्थ हैद्दद्दप्रचुर मात्रा में ओज-वृद्धि, अर्थात् आध्यात्मिक दृष्टि से विकसित होने की क्षमता में वृद्धि। इच्छाओं को निम्नतम करते हुए गहन साधना करने से काम-शक्ति आध्यात्मिक शक्ति में परिवर्तित हो जायेगी। और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए मेरी पुस्तक 'प्रैक्टिस ऑफ ब्रह्मचर्य' (ब्रह्मचर्य-साधना) पढ़ें। पूछे गये प्रश्न का इस पुस्तक में विस्तृत उत्तर मिल जायेगा।

४४

क्या यदि न सच बोलना आवश्यक ही न हो गया हो, अपितु अनिवार्य ही हो जाये तो सच न बोलने से समझौता किया जा सकता है? क्या ऐसे में असत्य बोलने को न्याय-संगत कहा जायेगा?

सत्य सत्य है और असत्य तो असत्य ही है, दोनों का परस्पर उतना ही अन्तर है जितना किसी वृत्ति की परिधि के विपरीत बिन्दुओं अथवा उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव का परस्पर अन्तर है। जो व्यक्ति नैतिक परिपूर्णता प्राप्त करना चाहता है, जो परमात्मा को पाना चाहता है और धर्म से प्रेम करता है, उसे सत्य पर अटल रहना चाहिए, भले ही कितनी भी संकटपूर्ण परिस्थितियाँ हों, कैसी भी गम्भीर स्थित हो। हरिश्चन्द्र को याद करें, इतनी मुसीबतों में भी वह कैसे सत्य पर अडिग रहा। कैसे उसका नाम अभी भी उसी प्रकार चमक रहा है! हरिश्चन्द्र सत्य की साकार प्रतिमा थे। यह एकमात्र उदाहरण ही व्यक्ति को भयंकर से भयंकर स्थितियों का सामना होने पर भी सत्य पर टिके रहने की शक्ति देने में पर्याप्त है। भले ही कितना भी आवश्यक एवं अनिवार्य हो, और हालात की माँग निजी स्वार्थवश कितनी भी आवश्यक हो, झूठ को तो निष्ठुरता से दूर भगा देना चाहिए। सत्य और झूठ को कभी भी एक-दूसरे से मिलाया नहीं जा सकता। एक का दूसरे से मिलान बहुत ही गलत है। इसमें सन्देह नहीं कि भागवत तथा अन्य पुराणों में कुछेक ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहाँ असत्य बोलना सही ठहराया गया है; किन्तु ऐसी घटनाएँ अपवाद स्वरूप ही हैं, वह हर समय और हर व्यक्ति के लिए सही नहीं मानी जा सकतीं। इस सम्बन्ध में और अधिक जानकारी के लिए मेरी पुस्तक 'ऐथिकल टीचिंग्स' (नैतिक शिक्षा) पढ़ें।

(क्रमशः)

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

आपका शान्ति-दूत :

ध्यान के द्वारा अपने-आपको दिव्यता के रंग में रँगना-५

(परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज)

मूल्यवान् सुझाव

ध्यान में सफलता पाने के लिए मैं आपको महान् सन्तों के कथनों में से कुछ अत्यन्त मूल्यवान् सुझाव दूँगा। यह हैंह्नह्ननिरन्तर स्मरण, सतत प्रार्थना और हर समय भगवन्नाम का जप करना। यदि परमात्मा का निरन्तर स्मरण बनाये रखने का स्वभाव विकसित कर लिया जाये, तो मन सदैव भगवान् की उपस्थिति के भाव से भरा रहेगा और सहज भाव से ही यह परमात्मा की दिशा की ओर ही प्रवाहित होता रहेगा। स्मरण तीन प्रकार का हैह्नह्नकिसी बाह्य वस्तु की सहायता लेने से, यह संसार की किसी वस्तु से सम्बन्धित हो सकता है, यह कल्पना पर आधारित हो सकता है, अथवा विवेक पर आधारित होने से यह बौद्धिक हो सकता है।

आप बाह्य वस्तु, कोई पावन मूर्ति, क्रौस का चिह्न, चित्र, आध्यात्मिक चित्र या फिर कोई भी फूल, पक्षी, सघन वन, स्वच्छ आकाश, श्वेत बादल इत्यादि कुछ भी अपने विचार के साथ जोड़ सकते हैं। आप यह अनुभव करें कि आप हर क्षण परमात्मा के सान्निध्य में हैं और वह आपके साथ आपसे बातें कर रहे हैं, साथ चल रहे हैं। आप स्वयं को उनका पुत्र, पुत्री, मित्र, सखा अथवा सेवक, कुछ भी समझ सकते हैं। आप जो-कुछ भी करें, उनको समर्पित करके करें, भले ही वह उत्कृष्ट, नीरस, हास्यकर या सन्देहास्पद कैसा भी हो। जहाँ-कहीं भी आप जा रहे हों, पग-पग पर, क्षण-क्षण में उन्हीं में रहें।

यदि इस बीच कोई समस्या आ जाये, तो उन्हीं से पूछें, 'अब मैं क्या करूँ?' यदि आप कभी भयभीत हों, तो उन्हें कह सकते हैं, 'अब आप ही मेरा साहस हैं।' यदि आप स्वयं को निर्बल पा रहे हों, तो आप कह सकते हैं, 'हे भगवान्, मुझे शक्ति दें!' यदि आपसे कोई गलती हो जाये, तो कहें, 'हे प्रभु, मुझे क्षमा कर दें!' अत: इस प्रकार हर समय अपना सम्बन्ध उनसे बनाये रखें। यदि आप उनसे अपना आध्यात्मिक सम्बन्ध बना कर रखते हैं, तब आपका उनसे सहज ही सम्बन्ध विकसित हो जायेगा और वह स्वाभाविक रूप से विकसित होता हुआ परिपूर्णता को प्राप्त कर लेगा।

यदि आप भावना-प्रधान प्रकृति के व्यक्ति नहीं हैं और भगवान् के साथ सम्बन्ध के ऐसे नैकट्य की कल्पना कर सकना कठिन प्रतीत होता है, तो आप बौद्धिक ढंग अपना सकते हैं। यदि आप दार्शनिक स्वभाव के हैं, तो आप विवेक का उपयोग करते हुए देख सकते हैं कि परमात्मा सर्वव्यापक सत्ता हैं, वह परम चैतन्य हैं। वह समस्त सृष्टि के अस्तित्व का मूल हैं। क्योंकि वह हैं, इसीलिए आपका अस्तित्व है। इस जगत् की प्रत्येक वस्तु का कोई-न-कोई कारण हैह्नह्नकुरसी का कारण बढ़ई है, तो जूते का कारण मोची है। इसी प्रकार आपके चारों ओर की प्रत्येक वस्तु को बनाने वाला कोई-न-कोई अवश्य है। वास्तव में यह सम्पूर्ण सृष्टि एक सर्वोच्च कारण का ही कार्य है। विश्व की भव्यता को देखें और कल्पना करें कि इसका कारण अर्थात् बनाने वाला, वह सर्वव्यापक सारतत्त्व कितना भव्य होगा! वह अपरिवर्तनीय, सर्वव्यापक और अदृश्य सारतत्त्व जो प्रत्येक वस्तु-पदार्थ में परिव्याप्त है और उन्हें धारण किये हुए है। इस प्रकार के बौद्धिक विचार आपको उनके सतत चिन्तन में सहायता करेंगे।

सभी सन्त यह सुझाव बताते हैं, किन्तु पूर्व के सन्त इनमें एक सुझाव और जोड़ते हैं। वह है सतत भगवन्नाम-जप,

जो कि तीन प्रकार से लिया जा सकता हैह्लह्लऊँची आवाज में, बिलकुल धीमे से मुख में और मानसिक। भगवान् का कोई एक नाम, मन्त्र या प्रार्थना चुन लें। कहने का अर्थ यह है कि आपका चयन संक्षिप्त होना चाहिए। जैसे कि आप कह सकते हैं, 'हे भगवान्, आपकी जय हो! जय हो!' या, 'हे प्रभु आप महान् हैं!' या, 'हे प्रभु, मुझ पर अपनी कृपा-दृष्टि बनाये रखें!' या, 'मैं आपकी शरण में हूँ, मुझे अपने चरणों में बनाए रखें!' इस प्रकार का कोई कथन अपने मन में दोहराते रहें। उन्हें याद करने के लिए सरल शब्दों का चुनाव करें। प्रात: से दोपहर तक, दोपहर से सायं तक इसी को कहते रहें। ईश्वर-चिन्तन की एक अटूट धारा आपके मन में प्रवाहित होने लग जाये और हर समय चलती रहे। परमात्मा के इस सतत स्मरण के अभ्यास के द्वारा तब आपके ध्यान के आन्तरिक जीवन को सहायता मिलेगी।

एक महान् सन्त ने एक बार कहा, ''जो व्यक्ति केवल घुटनों के बल झुक कर बैठे समय ही प्रार्थना करता है, वह तो न के बराबर ही प्रार्थना करता है।'' इसका अर्थ है कि यदि आप मन में केवल औपचारिक पूजा के समय ही भगवान् का ध्यान करते हैं और शेष समय मन को जंगली बन्दर की तरह इधर-उधर भागते रहने देते हैं तो आपकी प्रार्थना कभी भी सशक्त नहीं हो सकती। आपका मन अपने स्वभावानुसार अत्यन्त गतिशील रहेगा जो कि पूजा और प्रार्थना के बिलकुल अनुकूल नहीं होता। भगवान् के साथ आपके सम्पर्क के प्रभावशाली होने का स्तर इस बात पर निर्भर करता है कि आप भगवन्नाम-स्मरण के द्वारा उनके कितने सान्निध्य में रहते हैं।

यह ऐसा विषय है जिसकी चर्चा में घण्टों बिताये जा सकते हैं, किन्तु इतना जान लेना पर्याप्त है कि यह मनुष्य-जन्म हमें भगवान् का ध्यान करने के लिए ही मिला है। मन की स्थिरता के लिए और वास्तविक सुस्वस्थ एवं सकारात्मक व्यक्तित्व के लिए ध्यान ही एकमात्र मार्ग है। केवल एक यही मार्ग है। मुझे हठधर्मी होना या कठोर भाषा का उपयोग करना अच्छा नहीं लगता, किन्तु यहाँ मैं पूरी तरह से हठधर्मी हूँ। मैं पूर्णतया सुनिश्चित रूप से कहता हूँ कि सच्चे सुख और शान्ति की प्राप्ति का एकमात्र मार्ग ध्यान है। यदि आप ध्यान करना छोड़ देते हैं और अन्य ढंग अपनाने का प्रयास करते हैं तो अन्त में आपको पश्चात्ताप करना पड़ेगा, क्योंकि आपका जीवन व्यर्थ ही चला जायेगा। यदि आप अवसर खो देने के बाद समझते हैं तो आपको रोना पड़ेगा, ऐसी गलती न करें। अपने जीवन की विभिन्न गतिविधियों में, मानव-जीवन की केन्द्रिय प्रक्रियाह्लह्लध्यान से जुड़े रहें।

हम यह पहले ही देख चुके हैं कि ध्यान की प्रक्रिया में जीवन की शुद्धता सबसे अधिक आवश्यक है। यह ध्यान ही है जो आपके मन को सभी बुराइयों पर विजय पाने तथा अपने-आपमें से सभी दोषों एवं दुर्गुणों को निकालने की शक्ति देगा। यह आपको वह इच्छा-शक्ति देगा जिससे आप स्वयं को सुदृढ़ बना सकेंगे, इन्द्रियों को नियन्त्रित कर सकेंगे और दिव्य भाव में विकसित होने की आकांक्षा रखेंगे। परमात्मा के प्रति अपना प्रेम बढ़ायें; क्योंकि जहाँ प्रेम होता है, वहीं हमारा मन और हृदय रहता है।

इस अभ्यास को करते रहें। एक दिन के लिए भी न छोड़ें, भले ही आप बीमार हों या ठीक हों, निराश हों, या झुँझलाये हुए हों । मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि तब आपका जीवन भले ही आपके लिए कैसी भी कठिन समस्याएँ लायेह्लह्लतीव्रतम आघात, गहनतम शोक, कैसी भी कठिन परीक्षा की घड़ी या बड़े-से-बड़ा प्रलोभन, कुछ भी क्यों न हो, ध्यान की शक्ति से आप सब पर विजयी होंगे। ध्यान आपका ईश्वर से सीधा सम्पर्क स्थापित कर देगा। और वे तो सर्वशक्तिमान् हैं, वे आपको हर एक वस्तु-स्थिति पर विजय प्राप्त करा देंगे। यहाँ तक कि अन्त में आप मृत्यु से भी अतीत चले जायेंगे। ध्यान आपको जीवन के परम लक्ष्यह्लह्लजो कि मृत्यु पर विजय और शाश्वत आनन्द प्राप्त करना हैह्लह्लकी प्राप्ति करवाये, यह मेरी प्रभु से विनीत प्रार्थना है।

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

पूर्व-अंक का शेष :

स्वामी शिवानन्द की आत्मा का आकार २

(परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज)

बहुत वर्ष व्यतीत हो गये हैं जब गुरुदेव इस नश्वर संसार के लिए अदृश्य हो गये और आज उन्हें और अधिक स्मरण किया जाता है अपेक्षाकृत उस काल के, जब वे शरीर से विद्यमान थे। उनका कार्य जितना अधिकाधिक गति-वृद्धि को प्राप्त हो रहा है उतना उस काल में नहीं था जब वे शरीर रूप से हमारे साथ थे। उनकी सार्वभौमिक विद्यमानता का अशरीरी (discarnate) भाव मानो और अधिक विस्तृत एवं शक्तिशाली रूप से कार्य कर रहा है, अपेक्षाकृत उस सीमित कार्य के, जो पहले चल रहा था। आपने स्वयं भी देखा होगा कि सर्वत्र विस्तार हैह्नह्नजीवन के मूल्यों के बोध का विस्तार, मानवीय सत्ता की धारणा का ही विस्तार और राष्ट्रों के संघ में प्रतिष्ठित महान् आश्रम की अनुशंसा का विस्तार।

मुक्त आत्माएँ विविध वर्गों की हैं। कुछ ऐसी हैं जो अन्तिम सत्य परमेश्वर के साथ सम्बन्ध रखते हुए युगपत् रूप से इस संसार से भी सम्बन्ध रखती हैं। वे जीवन्मुक्त हैं, वे अवतार नहीं हैं, उन्हें हम जीवन्मुक्त पुरुष कहते हैं। परमात्मा के साथ और संसार के साथ एक ही समय सम्पर्क रखना जीवन्मुक्त का लक्षण है। यह प्रायः उस व्यक्ति की विशेषता मानी जाती है जो शरीर रूप से जीवित हो। पुनरपि कुछ ऐसी भी महान् आत्माएँ हैं जो अशरीरी भी हैं और उच्चतर एवं निम्नतर के मध्य सम्बन्ध बनाये रख सकती हैं।

आत्म-साक्षात्कार और ज्ञान की सात अवस्थाएँ हैं। प्रथम तीन अवस्थाएँ जिज्ञासा, आध्यात्मिक चेष्टा और साधना में संघर्ष की हैं। इस श्रेणी में विश्व के अधिकांश लोग आते हैं। परन्तु चतुर्थ अवस्था में आत्मा विश्व से ऊर्ध्वगमन करती है और 'सत्त्वापत्ति' अवस्था को प्राप्त होती है। उस अनुभूति में परमात्मा की देदीप्यमान ज्योति, दिन के प्रकाश के समान झलक दिखाती है। इसमें साधक गण सूर्य-प्रकाश से विश्व-दर्शन नहीं करते, अपितु उच्चतर धाम से आविर्भूत दूसरे सत्त्व से सहसा प्रकाश का अनुभव करते हैं। इस आकस्मिक प्रकाश की झलक उनकी दृष्टि एवं अधःस्थित लोक को आलोकित करती है, अतः वे स्पष्ट रूप से आत्म-दर्शन कर सकते हैं और साथ ही उस ज्योतिर्मय सत्य स्वरूप के दर्शन भी करते हैं और साथ ही विश्व-दर्शन भी होता है। वही अवस्था है जिसमें हम अपनी ध्यान-प्रक्रियाओं द्वारा उनसे सीधा सम्पर्क कर सकते हैं। वे हमारे हृदयों में, हमारे दैनिक जीवन में अवतरित होंगे और अपने विचार मात्र से ही कार्य की प्रेरणा करेंगे। ऐसे महान् गुरु अनेक हैं जो हमारे लिए विचार मात्र से सब प्रकार के कार्य करने में सक्षम हैं। स्वामी शिवानन्द जी महाराज इस विधा से कार्य करते थे। हम विचार कर सकते हैं कि वे ब्रह्मलोक में हैं, सार्वलौकिक, अन्योन्य सम्बन्धित, ब्रह्माण्ड का अन्तरंग व्यवस्थित केन्द्र जो परमात्मा की इस ज्योति से देदीप्यमान है, प्रकाशमान है। ऐसी थीं उनकी ध्यान-प्रक्रियाएँ!

यह पुरुष, महाप्रतापी सत्ता (Being) इस विश्व से सम्बद्ध भी है और नहीं भी है, और ऐसे हैं महान् पुरुष, जो दृश्यमान् जगत् का अतिक्रमण करके बृहत् सीमा तक ऊपर रहते हैं, किसी भी प्रकार से निष्पाप, अस्पृष्ट, असम्बद्ध। इस प्रकार से ध्यान करना भी सच्चे अर्थों में उन्हें अपने अन्तःकरण में आमन्त्रित करने के समान है। यदि कोई महानतम सेवा कर सकता है तो वह है जीवन के मूल्यों पर ध्यान करनाह्नह्नयह

ध्यान मनुष्य के भाग्य और प्रकृति द्वारा कार्यान्वित शक्ति को नियन्त्रित करता है।

हाथ और पैर कुशलतापूर्वक सेवा नहीं कर सकते। सच्ची सेवा तो मनुष्य के अन्तःकरण से उदित होती है। हमें बताया जाता है कि ऐसे महान् आचार्य भी इस विश्व में आये जिनके नाम सबके लिए अज्ञात हैं। उनके नाम समाचार-पत्र में नहीं छपते, धर्मग्रन्थों में भी नहीं आते। पुस्तकों में उनके नाम का उल्लेख नहीं है। वे आते हैं और चले जाते हैं। परन्तु जब वे आते हैं तो करते क्या हैं? वे चिन्तन करते हैं। वे अपने विचार यहाँ छोड़ कर चले जाते हैं। ये विचार, जो वे अपने पीछे छोड़ जाते हैं, ये विश्व की रक्षक शक्तियाँ हैं। वे अपना विज्ञापन नहीं देते, वे पुस्तकें नहीं लिखते, वे बोलते भी नहीं। उन्हें कोई देख भी नहीं सकता। ऊर्जाएँ हैं वे। शक्तियाँ हैं जो देवत्व के अदृश्य अवतारों के रूप में कार्य करती हैं।

अन्य वे हैं जो हाथ-पैर से कार्य करते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि अनेक महापुरुष विविध प्रकार के हैं; उनके व्यवहार भी विविध हैं, और कार्य-प्रणाली की तीव्रता भी विभिन्न है। आप जो हैं, वही आपका विचार है। अपने शरीर के अंगों से आप जो भी करते हैं, वे आप नहीं हैं। क्या आप कहते हैंद्बद्ब''मैंने इतना कर लिया? मैं इतनी सेवा करता आ रहा हूँ?'' जीवन के उच्चतर मूल्यों की दृष्टि से इनका कोई मूल्य नहीं है। मुझे बताओ, आप इस समय क्या चिन्तन कर रहे हैं? सारा दिन, प्रातः से सायं आप क्या सोचते रहते हैं? आपके मन में कौन से विचार उठते हैं? वह सेवा है जो आपने की है; इधर-उधर की भाग-दौड़ सेवा नहीं है, इतस्ततः कुछ भी देखना और कुछ भी करना सेवा नहीं है।

जब मैं महान् आचार्य, गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के साथ अपने सम्पर्क का इस क्षण स्मरण कर रहा हूँ तो इस प्रकार की विचार-शृंखला मेरे मन में उदित हो रही है। मैं अपना नम्र प्रणिपात उन्हें समर्पित करता हूँ और आपसे विनती करता हूँ कि आप उनके महान् गौरवशाली आत्मा के आकार में उन्हें वन्दन करें।

(भाषान्तर : श्रीमती गुलशन सचदेव)

भगवान् का निष्काम कर्ममय जीवन

श्रीकृष्ण सदा-सदा के लिए सर्वश्रेष्ठ कर्मयोगी थे। उन जैसा महान् कर्मयोगी किसी भी युग में नहीं हुआ। उन्होंने ज्ञान-ज्योति ज्योतित रखी। वे ज्ञान तथा निष्काम कर्म की साक्षात् मूर्ति थे।

गोप-ग्वालों, गायों तथा गोपियों के लिए उनके हृदय में अत्यन्तद्बप्रेम था। वे दीनों-असहायों तथा निर्धनों के मित्र, सहायक एवं हितैषी रहे। वे नम्र तथा विनीत आत्माओं पर अत्यन्त दया व अपार करुणा की वर्षा करते रहे।

सर्वसाधारण के लिए श्रीकृष्ण कोमल-चित्त वाले होते हुए भी, कंस की रंग-भूमि में मल्ल-युद्ध करने वालों के लिए वज्र रूप सिद्ध हुए। वे कंस के लिए काल स्वरूप थे। गोपियों के लिए कामदेव थे। योगियों तथा भक्तों के लिए अनवरत ध्यान का ध्येय पदार्थ तथा मुनियों के लिए परमानन्द मूर्ति थे। वे माता-पिता के लिए बालक थे। वे मदन-मोहन थे। वे मन्मथ के भी साक्षात् मन्मथ थे।

श्रीकृष्ण विश्वपति होते हुए भी नम्रता की मूर्ति थे। वे पार्थ-सारथि बने। युधिष्ठिर द्वारा किये गये राजसूय-यज्ञ में पधारने वाले अतिथियों के पाद-प्रक्षालन की सेवा उन्होंने स्वेच्छा से स्वयं अपने हाथों से की।

श्रीकृष्ण के राजनैतिक परिज्ञान तथा सूक्ष्म एवं विवेकभरी राजनीतिज्ञता-नीतिज्ञता की प्रशंसा समकालीन योग्यतम शासक भी करते थे और सब राजा-शासकगण उनकी सम्मति एवं उनसे सत्परामर्श लिया करते थे।

स्वामी शिवानन्द

मानव से ईश-मानव :

द डिवाइन लाइफ सोसायटी ४

(श्री एन. अनन्तनारायणन्)

जनवरी १९४७ में भीषण अग्निकाण्ड हुआ, जिसमें आश्रम के भवन, सामान, पुस्तकें और पशुओं की खाद्य-सामग्री के रूप में ३,००० रुपये की हानि हो गयी। किन्तु स्वामी जी के मुख-मण्डल पर वही चिर परिचित मुस्कान थी और पहले की भाँति वे सभी अतिथियों के प्रेमपूर्ण स्वागत-सत्कार में व्यस्त थे मानो कुछ हुआ ही न हो, जब कि अन्य अन्तेवासियों के चेहरे इस दुःखद घटना के कारण लटके हुए थे।

एक अन्य अवसर पर, जब स्वामी जी पंजाब के गवर्नर के आमन्त्रण पर ऋषिकेश के उस डाक बँगले पर गये थे यहाँ गवर्नर ठहरा हुआ था तो गंगा जी में भयंकर बाढ़ आयी और उसमें स्वामी जी का कुटीर बाढ़ग्रस्त हो गया। स्वामी जी की अधिकांश पुस्तकें तो बचा ली गयीं, किन्तु कुछ बह गयीं। जब गुरुदेव आये तो उनके कुटीर का कुछ भाग तो भग्नावस्था में था और उन्हें अत्यन्त शीघ्रता से ठीक किये गये चिकित्सालय के एक कक्ष में ठहराना पड़ा। किन्तु स्वामी जी इस सबसे पूर्णतया निश्चिन्त अपने उसी आनन्द में मग्न थे।

भग्न कुटीर बहुत शीघ्र ठीक कर दिया गया। इसके आगे के कुछ भाग का नवीकरण भी कर दिया गया, विशेष रूप से अतिथियों की दृष्टि से यह सब किया गया, किन्तु भीतरी आवास कक्ष बाढ़ से अप्रभावित रहे थे; उन्हें उसी तरह रहने दिया गया।

१९४९ का शीत काल था। गुरुदेव एक दर्शनार्थी को अपने कक्ष में ले गये, ''यहाँ से गंगा और हिमालय के भव्य दर्शन होते हैं'', कुटीर में प्रवेश करते ही वह बोला, ''यदि आप यहाँ बरामदे में बैठें अथवा कक्षों में भी जायें तो आपको गंगाजी का 'सतत प्रणव-नाद' सुनायी देगा।'' तभी स्वामी जी उसे अपने भीतरी कक्ष में ले गये। वह आश्चर्यचकित हो गया, ''क्या आप यहाँ रहते हैं? क्यों? यह तो जेलघर के कक्ष जैसा है, वायु का चिह्न तक नहीं, भरी दोपहर को छोड़ कर यहाँ प्रकाश का प्रवेश भी निषिद्ध प्रतीत होता है! कक्ष नहीं, यह तो गुहा जैसे प्रतीत होते हैं, और छोटे भी इतने अधिक। और आप इनमें बैठ कर काम करते हैं? यह तो आपकी हस्तलिपियों और पुस्तकों के लिए ही पर्याप्त नहीं है। यहाँ तो आप किसी-न-किसी वस्तु के पैरों तले आये बिना चल-फिर भी नहीं सकते! सोने वाले कमरे में तो सीलन भी बहुत है, यहाँ तो व्यक्ति को साँस लेना ही कठिन है। मुझे तो आश्चर्य हो रहा है कि आप यहाँ कैसे रह रहे हैं!'' अतिथि कहता ही जा रहा था, ''यद्यपि यहाँ प्रवेश करते ही मेरा हृदय एक विलक्षण आध्यात्मिक उल्लास से भर गया है; किन्तु मुझे लगता है कि और अधिक देर तक यहाँ रुका तो छह मास भी नहीं जी पाऊँगा। स्वामी जी! आप और कहीं अच्छे कमरों में क्यों नहीं चले जाते?'' स्वामी जी ने उसे धैर्य बँधाते हुए कहा, ''न, न! मैं यहाँ बिलकुल ठीक हूँ।'' और वह अतिथि आश्चर्यचकितावस्था में प्रणाम करके चला गया।

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

शिवानन्द-ज्ञानकोष :

पूर्णावतार भगवान् श्रीकृष्ण

(परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज)

विजय-मुहूर्त था। आकाश में रोहिणी नक्षत्र चमक रहा था। शुभ घड़ी का शुभागमन हुआ। भगवान् श्रीकृष्ण के परम मंगलमय अवतार के परम पुण्यमय समय सभी तत्त्व अति सौम्य हो रहे थे। शीतल-मन्द-सुगन्ध त्रिविध समीर बह रहा था। तारे जगमगा रहे थे। सरोवर पंकजों से (रात्रि में भी) परिपूर्ण थे। इस धरा-धाम में मध्य रात्रि की परम पुनीत बेला में भगवान् श्रीकृष्ण अवतरित हुए। देवलोक में देवता दिव्य दुन्दुभियाँ बजाने लगे, किन्नर तथा गन्धर्व मधुर मंगल गीत गाने लगे, सिद्ध तथा चारण स्तुति गान करने लगे। विद्याधरियाँ हर्षविभोर हो कर अप्सराओं के साथ नृत्य करने लगीं। देवता और ऋषि-मुनि आनन्दातिरेक में आकाश से पुष्प-वृष्टि करने लगे।

सर्वमंगलमय अवतार के समय भगवान् विष्णु के कमल के से नेत्र थे। वे चारों सुन्दर हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म लिये हुए तथा वक्ष:स्थल को सुशोभित करने वाला श्रीवत्स का चिह्न धारण किये हुए थे। वसुदेव जी ने दिव्य शिशु के इस आश्चर्यजनक अद्भुत रूप के विस्मयविमुग्ध हो कर दर्शन किये। वसुदेव जी हाथ जोड़ कर स्तवन करने लगेह्नह्न''मैं समझ गया कि आप साक्षात् परम पुरुष परमेश्वर हैं। आप ज्ञान और आनन्द के मूर्तिमन्त स्वरूप हैं। आप चिदानन्द स्वरूप हैं। आप सभी प्राणियों के हृदय में निवास करते हैं। आप समस्त मनों-बुद्धियों के साक्षी हैं। आप माया तथा अविद्या से परे हैं।''

माता देवकी भी अपने पुत्र में भगवान् विष्णु के सभी लक्षण देख कर उनकी स्तुति करने लगींह्नह्न''अनादि सर्वव्यापी, स्वयंप्रकाश, निर्गुण, निर्विशेष, निर्विकार एवं निष्क्रिय ब्रह्म आप ही हैं। सर्वसृष्टि के आदि (उत्पत्ति) और अन्त (प्रलय) का कारण आप ही हैं। कृपा करके मुझे अपना यह चतुर्भुज रूप नहीं दिखलाइए। एक सामान्य शिशु के रूप में ही मुझे दर्शन दीजिए। अपने इस दिव्य, लोकोत्तर रूप को तिरोहित कर लीजिए। हम कंस से बहुत ही भयभीत हैं।''

श्री भगवान् ने कहाह्नह्न''तुम दोनों ही मेरे प्रति पुत्रभाव तथा निरन्तर ब्रह्मभाव रखना। पुत्रभाव से मेराह्नह्न 'वात्सल्य-स्नेहसिक्त' प्रेमपूर्वक ध्यान करना और ब्रह्मभाव से मेरा निरन्तर चिन्तन करना। इससे तुम दोनों को नित्य आनन्द (नित्यानन्द) तथा अमृतत्व (परमपद) की प्राप्ति होगी।'' तदुपरान्त श्रीभगवान् ने अपनी माया शक्ति से एक मनोरम, नयनमुग्धकारी, चित्ताकर्षक शिशु का रूप धारण कर लिया।

पूर्णावतार

भगवान् श्रीकृष्ण महाविष्णु के श्रेष्ठतम, सर्वोत्तम अवतार थे। वे षोडशकलासम्पन्न पूर्ण अवतार थे। वे सुविख्यात यादव-वंशज थे। वे यादव कुल के भूषण थे। वे जगद्गुरु थे। वे प्रेमाधीश थे। वे मानव-प्रेमी थे। मुरलीधर श्रीकृष्ण की दिव्य मनमोहिनी मूर्ति ने आज भी भारत के हृदय को पूर्णतया आकृष्ट तथा दिव्य प्रेम की स्निग्ध शृंखला में आबद्ध किया हुआ है।

श्रीकृष्णावतार के तीन मुख्य उद्देश्य थे। पहलाह्नह्नदुष्टों का नाश, साधु-सन्तों की रक्षा; अधर्म का उच्छेदन, धर्म की संस्थापना करना था। दूसराह्नह्नकुरुक्षेत्र की रणभूमि में महाभारत के महायुद्ध में 'गीता' का विलक्षण अमर सन्देश

देना था। तीसराह्वह्वभारत के विभिन्न भक्ति-सम्प्रदायों के अपूर्व विकास के मूलस्रोत अथवा केन्द्रधुरी बनना था।

कृष्णावतार का उद्देश्य-प्रयोजन केवल अधर्म का मूलोच्छेदन (नाश) करना ही नहीं था, प्रत्युत् संसार के सम्मुख भगवद्-महिमा को उद्‌घाटित करना भी था। श्रीकृष्ण अखिल ब्रह्माण्ड के प्रभु सत्तासम्पन्न, सर्वशक्तिमान् परब्रह्म परमात्मा के साकार-प्रतिनिधि स्वरूप थे। उनके जीवन के समायोजित, सन्तुलित, संयत, आचरण, चरित्र एवं चरित में भगवान् (ब्रह्म) की परम तेजोमयी पूर्ण तेजस्विता चित्रित है।

भगवद्‌गीता में भगवान् श्रीकृष्ण का जीवन कर्ममय है। वे कर्मनिष्ठ हैं। उनमें सर्वदा सर्वयुगीन, सार्वकालिक भगवत्पुरुष दर्शाने वाले स्वरूप में परम ज्ञान एवं परम शक्ति का पूर्ण सम्मिश्रण पाया जाता है। विश्व के महान् आध्यात्मिक नेता के रूप में उनमें परम विद्या और विनय-विनम्रता का अभिन्न समन्वय है, मणि-कांचन संयोग है।

श्रीकृष्ण पूर्ण गुरु थे, वह ज्ञानयोगी, भक्त, राजयोगी और कर्मयोगी थे। उन्होंने कर्म, उपासना, भक्तियोग और ज्ञान का उपदेश दिया। उन्होंने रण-भूमि में अर्जुन का रथ चलाया अर्थात् पार्थ-सारथि बने। वृन्दावन में अभिन्न रूपा गोपियों के साथ रासनृत्य किया। उद्धव और अर्जुन को योग और ज्ञान का पाठ पढ़ाया 'अमर गीत' अर्थात् 'गीता' में चारों योगों का समन्वय परिपूर्ण रूप से परिलक्षित है। भगवान् श्रीकृष्ण उच्चतम ज्ञान, श्रेष्ठतम भाव तथा महानतम कर्म के प्रत्यक्ष स्वरूप थे। हमारे धर्म-शास्त्रों में भगवान् श्रीकृष्ण से अधिक उच्चतम, श्रेष्ठतम, महानतम, पूर्णतम एवं परमोत्तम जीवन और किसी का भी वर्णित नहीं है।

भगवद्‌गीता में भगवान् श्रीकृष्ण का अर्जुन को दिया गया दिव्योपदेश है। एकनिष्ठ हो कर सदा नियमपूर्वक स्वाध्याय के लिए यह अद्‌भुत ग्रन्थ है। साधक-जिज्ञासु इसका नित्यप्रति पारायण नियमितता से, मनोयोग से करते हैं। गीता के प्रथम छ: अध्याय कर्मयोग-सम्बन्धित हैं और महावाक्य **'तत्त्वमसि'** के **'तत्'** पद के द्योतक हैं। मध्य के **'छह'** भक्तियोग के हैं जो **'त्वम्'** पद के द्योतक हैं तथा अन्तिम **'छह'** अध्याय ज्ञानयोग के **'असि'** पद के द्योतक हैं।

योगेश्वर

आप भले ही समुद्र-तट के सिकता-कणों को तथा आकाश-मण्डल के तारों को गिनने में सफल हो जायें, परन्तु आपके लिए त्रिलोकीनाथ श्रीकृष्ण के अद्‌भुत चमत्कारी वीरतापूर्ण, गरिमामय लीलाओं-कार्यों की गणना करना असम्भव होगा। वे अभी बाल्यावस्था में ही थे कि उन्होंने अद्‌भुत असंख्य लीलाएँ कीं, वीरतापूर्ण अद्‌भुत चमत्कार दिखाये।

विश्वात्मा, त्रिलोकेश्वर और योगेश्वर श्रीकृष्ण की महिमा-वैभव का वर्णन कौन कर सकता है? महर्षि दुर्वासा और उनके सहस्र-सहस्र शिष्यों की क्षुधा श्रीकृष्ण के शाक के एक पत्ते का अल्पांश (कण) मात्र खाने से शान्त हो गयी। इससे सिद्ध हो जाता है कि श्रीकृष्ण विश्वात्मा हैं। श्रीकृष्ण ही एक परम आत्मा हैं जो सभी प्राणियों में व्याप्त हैं।

भगवान् श्रीकृष्ण अब भी वृन्दावन में विचरते हैं और अपने श्रद्धालु-प्रेमी भक्तों को दर्शन देते हैं। यदि आप उन्हें हृदय से चाहें तो अब भी वहाँ कुंज गलियों में, सेवाकुंज में उनके दर्शन कर सकते हैं। ब्रजराज श्रीकृष्ण अपूर्व, अद्वितीय त्रिलोकीनाथ हैं। वे आपको प्रेम से आलिंगनबद्ध करने के लिए वैसे ही दोनों हाथ पसारे प्रतीक्षा में खड़े हैं जैसे पुरातन काल में मीरा, सूरदास तथा अन्य प्रेमियों का सप्रीति आलिंगन किया था। आप अपने मन को शुद्ध करें। दुर्वासनाओं तथा अहंकार का नाश करें। वृन्दावन के बाँकेबिहारी मुरलीमनोहर वंशीवादक की एक बार फिर वंशी की मधुर तान सुनें। गीता का अमर ज्ञान सुनें और उन्हें अपनी शरीर रूपी वंशी को बजाने दें। आप इस अमूल्य-दुर्लभ अवसर को मत खोयें; क्योंकि इस मानव-शरीर की, मानव-जीवन की प्राप्ति अति दुर्लभ है।

(अनुवादक : श्री स्वामी अर्पणानन्द जी महाराज)

शिवानन्द वाणी का संक्षिप्त जीवन-वृत्त

सद्‌गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के गहन भक्तों में से एक, श्रीमती वाणी बाई राम का जन्म गुन्टूर, आन्ध्र प्रदेश के एक उच्च संभ्रान्त एवं सुसंस्कृत ब्राह्मण परिवार में १७ अगस्त १९१४ को हुआ। वह अपने माता-पिता की इकलौती सन्तान थीं। जब वह अभी नन्हीं बालिका ही थीं, तभी उनकी माता का निधन हो गया। उनके पिता श्री दासु माधव राव गारु, जो कि एक सुप्रतिष्ठित वकील थे, ने अपनी पुत्री का अत्यन्त प्रेम एवं ध्यानपूर्वक लालन-पालन किया। उनमें जन्मजात संगीत में रुचि एवं कुशलता को देखते हुए उन्होंने उसे संगीत और विद्या की अधिष्ठात्री देवी के नाम पर 'वाणी' नाम दिया।

श्री वाणी माता जी, सबसे बढ़ कर एक सर्वोत्कृष्ट माँ हैं। कोई भी व्यक्ति, जो उनके श्रेष्ठ और सन्त-स्वभाव के बच्चों से थोड़ा-सा भी परिचित है, वह तत्काल इस बात से सहमत हो जायेगा कि वह आज के युवाओं को सन्त-स्वभाव और सशक्त व्यक्तित्व अर्जित करने के साथ ही इस संसार के प्रत्येक लौकिक कर्म ही नहीं, बल्कि साथ-साथ मानव-जाति के हृदय में अमर स्थान एवं ईश्वर-प्राप्ति तक के मार्ग पर सफलता प्राप्त करने की शिक्षा प्राप्त कराने वाली एक सर्वोत्तम शिक्षिका हैं।

वह जब आपको बताती हैं कि गुरुदेव कैसे महिमान्वित व्यक्तित्व प्राप्त सन्त थे, तब उनका उद्देश्य आपको उसी रूप में विकसित होने की प्रेरणा देना होता है। जब वह आपको गहन ज्ञान का शाश्वत सन्देश देती हैं, तो उनका आशय आपसे अपने जीवन और आत्मा में उस ज्ञान को आत्मसात् करने और उनकी शिक्षाओं को अपना पथ-प्रदर्शक बना कर उस पर चलने के लिए प्रार्थना करना होता है। इस प्रकार आपह्लह्लआपमें से हर एकह्लह्लइसी जीवन में, इसी जन्म में, अभी और यहीं प्रभु-साक्षात्कार प्राप्त करें!

स्वामी चिदानन्द

उन्होंने श्री ''गायक सर्वभौमा'' पारुपल्ली रामकृष्णैया पन्तुलू जी से कर्नाटक संगीत में तथा श्री पण्डित एस. एन. रत्नझंकार जी से हिन्दुस्तानी संगीत में प्रशिक्षण प्राप्त किया। मई १९२९ में उनका विवाह लखनऊ विश्वविद्यालय के राजनीति-विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर डा. श्री वी. एस. राम जी से हो गया। विवाह के तुरन्त बाद ही उनके पति को यूरोप में आगे शिक्षा प्राप्त करने के लिए 'कार्नेजी फेलोशिप' छात्रवृत्ति प्राप्त हो गयी; अत: वे दोनों यूरोप चले गये। वहाँ के आवास-काल में उन्होंने यूरोप के सभी देशों में भ्रमण किया तथा पैरिस और वेयाना में पश्चिमी संगीत वायलन (बेला) की भी शिक्षा प्राप्त की।

जनवरी १९५१ में श्रीमती राम के जीवन में एक बड़ा झंझावात आ गया जब इस अल्प आायु में अचानक उनके पति का निधन हो गया, यह एक असहनीय एवं अपूरणीय हानि थी। उनके दुर्बल कन्धों पर सात बच्चों के पालन-पोषण का भार आ

पड़ा। असहनीय शोक एवं गहन असहाय अवस्था उन्हें अपने गुरु श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के दिव्य चरणों में खींच लायी। स्वामी जी की उदार अनुकम्पा और प्रेरणाप्रद उपदेशों ने उन्हें पूर्णतया परिवर्तित कर दिया। वह नये हृदय और नवीन शक्ति से सम्पन्न एक नूतन व्यक्ति हो गयीं। जीविका चलाने के लिए वह आकाशवाणी, नई दिल्ली में संगीत प्रस्तुतकर्ता (प्रोड्यूसर) के रूप में लग गयीं तथा साथ ही 'श्री शिवानन्द संगीत विद्यालय' चलाना आरम्भ कर दिया। अपनी सम्पूर्ण योग्यता एवं सामर्थ्य के अनुसार अपने बच्चों के प्रति कर्तव्य निभाते हुए, इस संसार में रह कर परिपूर्ण हृदय को शुद्ध रखते हुए, अपने गुरु की भरपूर सेवा करते हुए, सेवा-परायण एवं दानशील जीवन कैसे जीते हैं, यह उन्होंने अपने गुरुदेव से सीखा।

अपने गुरुदेव के प्रति उनकी गहन श्रद्धा, भक्ति और प्रेम उनकी पुस्तक 'चिल्ड्रन्स शिवानन्दा' (बालकों के शिवानन्द) में तथा दिल्ली में संस्थापित 'शिवानन्द कल्चरल एसोसिएशन' (शिवानन्द सांस्कृतिक संस्था) में दृष्टिगोचर होता है। सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ने उन्हें 'दिव्य जीवन ज्योति' पदवी से विभूषित किया तथा 'शिवानन्द वाणी' नाम दे कर अशीर्वादित भी किया। 'शिवानन्द वाणी' माता जी ने २८ जून १९७२ में नश्वर देह को त्याग कर अपने प्रिय गुरुदेव के चरणों में शाश्वत स्थान प्राप्त कर लिया।

१७ अगस्त २०१४ को शिवानन्द वाणी माता जी की जन्म शताब्दी है। हम उनका एक लेख, एक कविता तथा हमारे परम पूज्य गुरुदेव द्वारा उनको लिखा गया एक प्रेरणाप्रद पत्र, उनकी पावन स्मृति के रूप में, जन्म शताब्दी के शुभ अवसर पर अपनी प्रेमपूर्ण श्रद्धांजलि के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

भगवान् और उनकी विद्यमानता

दिनांक : २६.७.५५

ॐ

शिवानन्द वाणी बाई,

लखनऊ

दिव्य आत्मा, प्रणाम,

ॐ नमो नारायणाय।

आपका श्रद्धा-भक्ति से ओत-प्रोत पत्र मिला। बहुत-बहुत धन्यवाद। आप किसी भी परिस्थिति में हों, किसी भी अवस्था में हों, आप एकाकी नहीं हैं। आपको उस स्थिति से उबारने और दिशा-निर्देशन देने के लिए मैं सदा आपके साथ हूँ। भगवान् सदैव आपके साथ हैं और वे निश्चित रूप से आपकी देख-रेख करेंगे। इसके प्रति सुनिश्चित रहें। जहाँ भी आप जाती हैं, वे आपके संग हैं और जो-कुछ भी करती हैं, वह उनकी दिव्य उपस्थिति में ही कर रही हैं। इसे सदैव अनुभव करें। तब फिर चिन्ता करने और परेशान होने की कोई भी आवश्यकता नहीं है। आपके जीवन का प्रत्येक कटु अनुभव आपको सुदृढ़ करने और अपनी ओर अधिक लाने के लिए ही वह देते हैं। शान्त रहें! सुशान्त रहें। प्रशान्त रहें! धीरज न खोयें। सदा मन का सन्तुलन बनाये रखें। किसी भी बात से घबरायें नहीं। जब आपने एक बार श्री राम के चरण-कमलों का आश्रय ले लिया, तब फिर भयभीत होने अथवा परेशान होने की किंचित् भी आवश्यकता नहीं रह जाती। आपके पथ को आलोकित करने के लिए, आपको ऊपर उठाने और निर्देश देने के लिए उनके अदृश्य हाथ सदा-सर्वदा आपके साथ हैं। आपको परमानन्द-प्राप्ति के पथ

को दर्शाने के लिए उनका दिव्य प्रकाश आपके सम्मुख है। उनकी ओर बढ़ाये गये एक कदम के उत्तर में वे दश कदम आपके निकट आ जाते हैं। प्रत्येक स्थान पर और हर समय उनकी दिव्य सहायता के प्रति सदा सुनिश्चित रहें! किंचित् भी शोक न करें। नकारात्मक विचार मन में न आने दें। सदैव प्रफुल्लित एवं प्रसन्न रहें, क्योंकि आपने श्री राम की शरण ली है, और जब आप उनकी शरणापन्न हो गयी हैं तो निश्चित रूप से आपको प्रसन्न, आनन्दित और सुशान्त रहना चाहिए।

भगवान् की कृपा आप सब पर हो!

वहाँ पर सबको मेरे प्रणाम!

आपका निजी आत्मा

शिवानन्द

मेरे अपने गुरुदेव को...

मेरे अपने गुरुदेव के पावन दिव्य चरणों में श्रद्धा, भक्ति और हार्दिक प्रेमपूर्वक साष्टांग दण्डवत् प्रणाम! आपने नया जीवन, नूतन शक्ति, सोचने का नवीन ढंग दे कर मुझे पूर्णतया रूपान्तरित कर दिया है।

जब मैं इस संसार में अपना सब-कुछ गँवा बैठी थी और संसार ने मुझे एक निकम्मे, अनचाहे कीट-पतंग के समान दुत्कार दिया था, तब हे मेरे रक्षक, आप मेरी रक्षा के लिए आये, मुझे इस भ्रान्तिपूर्ण जगत् में से उठाया और आशा, शाश्वतता और आनन्द के बोध के चरम शिखर पर पहुँचा दिया।

मेरे गुरुदेव! आपने मुझे मन का सन्तुलन, अनुशासन, अनासक्ति, अद्वितीय गुरुभक्ति, सेवा-भाव और सबसे बढ़ कर भगवन्नाम का सतत स्मरण सिखाया। मैं भगवद्-प्राप्ति की साधक हूँ और हे मेरे गुरु भगवान्! मैं आपमें ही अपने भगवान् को देखती हूँ।

मेरे सभी दु:ख और निराशाएँ मिट गयी हैं। मुझमें अब अधिक-से-अधिक साहस, शक्ति और तीव्र आध्यात्मिक जिज्ञासा होती जा रही है। आप ही मुझे जागृत करने वाले हैं, मेरे आध्यात्मिक मार्ग-दर्शक हैं और मेरे सर्वव्यापक स्वरूप हैं तथा आप एक उदारचेता सक्रिय योगी हैं। मैं सतत वर्धमान श्रद्धा और भक्ति से आप्लावित हो कर आनन्दातिरेक में सराबोर हो रही हूँ। मैं अपने पापपूर्ण शीश को आपके पावन चरण-कमलों में रखते हुए आपके पावन चरणों का स्पर्श पा सकी, इसके लिए मैं स्वयं को सर्वाधिक सौभाग्यशाली, परम सौभाग्यशाली समझती हूँ। कितना आनन्द! कैसा रोमहर्षक, कितना प्रेरणाप्रद है आपके कर-कमलों द्वारा लिखित वह अनमोल निर्देशनों से पूर्ण पत्र का प्राप्त होना!

मेरे अपने स्वामी जी, मेरे अनन्त प्रणाम स्वीकार करें! क्या मैं सचमुच ही ऐसे महान् सन्त की सहानुभूति प्राप्त करने के योग्य हूँ?

आपकी उदारता और हृदय की विशालता मुझे कई बार विस्मृत कर देती है कि आप मेरे गुरु हैं और मैं भूल से, आपसे ऐसे बात करने लगती हूँ जैसे अन्य किसी से भी! हे मेरे गुरुदेव, कृपया मेरी ऐसी भूल को क्षमा कर दें!

मेरे करुणामय गुरुदेव! मेरे प्रभु! आपका अदृश्य वरदहस्त सदा मेरे साथ रहता हुआ मेरे जीवन के हर कदम और हर परिस्थिति में निरन्तर सहायता करता रहता है।

जो भी कोई मुझे मिलता या मेरे साथ बातचीत करता है, उससे आपके सम्बन्ध में चर्चा किये बिना मैं रह नहीं पाती। जब मैं आपके विषय में बात कर रही होती हूँ, तो मेरे लिए वही सर्वाधिक प्रसन्नता का और अभूतपूर्व सौभाग्य का समय होता है।

मेरे हृदय में आपके अतिरिक्त और किसी विषय अथवा विचार के लिए स्थान नहीं है। वस्तुत: मैंने अपने हृदय में अपने प्रभुतुल्य प्रिय गुरुदेव के लिए मन्दिर बना लिया है और उसमें हृदयरूपी कोमल सिंहासन पर उन्हें प्रतिष्ठित कर लिया है।

स्वामी जी! मुझे अनेकों परीक्षाओं में से गुजरना पड़ा है, और मैंने ऐसे-ऐसे चमत्कार होते देखे हैं जिन्हें देख-सुन कर सभी आश्चर्यचकित रह जायें। मैं आपको अपना हितैशी, एक करुणापूर्ण गुरु, स्नेहमय पिता, महिमामय गुरु और सबसे बढ़ कर अपना भगवान् मानती हूँ। आपके उदार एवं दानशील कर-कमल, दयालु हृदय और कोमल एवं मधुर स्वभाव ने मुझे वैराग्य के सार-तत्त्व से मिश्रित राम-नाम के मधुर अमृत का पवित्रता, परिपूर्णता और विनम्रता के प्याले में पान करवा दिया है।

मेरे अपने स्वामी जी, जब मैं आपके पावन धाम में आती हूँ तो मुझे वैकुण्ठलोक में पहुँच जाने जैसा आनन्द प्राप्त होता है। आपके कार्यालय में आपको बैठे देख कर स्वयं नारायण भगवान् के स्वर्ग में बैठे हुए दर्शन करना प्रतीत होता है। आपको कीर्तन करते और अँगरेजी भाषा में भजन गाते सुन कर, भगवान् श्री कृष्ण के सम्मोहक वंशी-वादन सुनने जैसी अनुभूति होती है। आपकी सुमधुर, प्रभावशाली एवं रोमांचक आवाज हमें अपनी ओर आकर्षित करके समस्त देह में पावन विद्युत् तरंगें प्रवाहित कर देती है। आपके सान्निध्य में बैठ कर आपको अपने चहुँओर बैठे हुए भक्त जनों पर मन्त्रमुग्ध कर देने वाले ज्ञान मुक्ताओं की वृष्टि करते हुए देख कर व्यक्ति आनन्दविभोर हो जाता है।

हे शिव! आप ही मेरा आश्रय हैं। आपके बिना मैं कुछ भी नहीं। आप ही मेरी अन्त:प्रेरणा हैं।

आप ही हमारी शाश्वत दिव्य अमूल्य निधि और निर्देशक हैं। आपके मन्त्रमुग्ध कर देने वाले सर्वोपरि प्रवचन निराश एवं हताश लोगों के हृदयों पर मरहम का काम करते हैं।

मेरे प्रभु आपके प्रेरणाप्रद सन्देशों की कुछेक पंक्तियाँ सदा मेरे कानों में गूँजती रहती हैं :

सेवा, भक्ति, ध्यान द्वारा साक्षात्कार करो।
भले बनो, भला करो, दयालु बनो।
पूछो, 'मैं कौन', स्वयं को जानो, मुक्त हो जाओ!
अनुकूल बनो, समाधान करो, सुनम्य बनो!
अपमान सहो, कष्ट सहो, यही है सर्वोच्च साधना।
श्रोता, द्रष्टा और ज्ञाता को खोजो,
आप शरीर नहीं, यह मन नहीं,
हैं अमर आत्मा, दिव्य आत्मा!

* * *

थोड़ा खाओ, थोड़ा पीओ।
थोड़ा बोलो, थोड़ा चलो।
थोड़ी सेवा, थोड़ा आराम करो।
थोड़ा मनन और थोड़ा विचार करो!
थोड़ा कीर्तन, थोड़ा जप,
और थोड़ा ध्यान भी करो।

* * *

स्वामी जी महाराज, कृपया मेरे दोषों और गलतियों के लिए मुझे क्षमा कर दें। मेरा हृदय पूर्णतया शिवानन्दमय है।

शिवानन्देति सदा स्मरणम्,
शिवानन्देति सदा जपम्,
शिवानन्देति सदा ध्यानम्,
सदैव शिव कीर्तनम्... ॐ

आपकी विनीत सेविका
सदा आपके चरणों में
शिवानन्द वाणी

'मेरे प्रभु'

गुरुदेव ही हैं मेरे प्रभु,
इतने अनमोल, इतने मधुर,
बिलकुल भगवान् जैसे;
मेरे चिन्तन को दिव्य कर्मों से भरते हुए,
मेरी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए
देते हैं मुझे पूर्ण प्रसन्नता।
उन्होंने सिखा के मुझे राम नाम स्मरण,
भर दी आत्मा में शान्ति, सुशान्ति!
मेरे टूट चुके मन को, दीं
शरण, सुख और आनन्दपूर्ण तरंगें।
उनके श्रीचरणों से लिपटी हुई, मैं
माँग रही करुणा की भिक्षा,
भावविभोर अवस्था में
अपने लक्ष्य तक पहुँचने को!

* * *

एक माँ की अपने गुरु के प्रति असीम भक्ति

(श्री अमरनाथ राम)

अल्प आयु में अपने पति के निधन हो जाने के बाद विक्षिप्त, दिशाहीन और निराशाजनक एवं हतोत्साहपूर्ण परिस्थितियों में ग्रस्त हुई, निजी उलझनों एवं छह छोटे-छोटे बच्चों के पालन-पोषण की कठिनाइयों में घिरी हुई, सपने में देखे हुए एक दृश्य का अनुसरण न कर पाने की लाचारी में स्वयं को न रोक पाती हुई, मेरी माँ, श्रीमती वाणी बाई राम (शिवानन्द वाणी), सद्गुरुदेव श्री श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के पास सहायता, प्रकाश और निर्देशन प्राप्त करने के लिए पहुँची। यह सन् १९५४ की बात है।

अपने गुरु के प्रति अनन्य भक्ति के कारण मेरी माँ को तुरन्त आन्तरिक शान्ति एवं प्रशान्तता की प्राप्ति हुई। उनके चरणों में माँ को शक्ति, धीरज तथा अपने परिवार और समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व निभाते रहने की इच्छा पुनः जाग्रत हुई। उन्होंने अनुभव किया कि गुरुदेव ने उसके जीवन में चमत्कार करने आरम्भ कर दिये हैं। वित्तीय समस्याओं के हल के लिए तथा उसे जीवन में व्यस्त कर देने के लिए दिव्य संगीत के माध्यम से माँ की 'आल इण्डिया रेडियो, दिल्ली' में 'डिप्टी चीफ़ प्रोड्यूसर' के पद पर नियुक्ति हो गयी। माँ उत्साहित हो गयी और गुरुदेव की दिव्य कृपाओं के फल-स्वरूप शीघ्र ही आत्म-निर्भर, उपयोगी और स्वावलम्बन से भर गयी। गुरुदेव और उनका आश्रम उसका परिवार एवं शक्ति-स्रोत बन गया। वास्तव में गुरुदेव का आश्रम हम सभी के लिए दूसरा घर हो गया, जहाँ माँ गंगा और पावन हिमालय हमारा पोषण करते थे। हम सब बच्चों को गुरुदेव के चरणों में पलने-बढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके आशीर्वाद और निर्देशन में, हम सब समय आने पर अपने-अपने जीवन में उनकी गहन शिक्षाओं और प्रेरणाप्रद मार्ग-दर्शन को कभी भी न भूलते हुए, अच्छे व्यवसायों में लग गये। शिवानन्द वाणी के लिए तो गुरुदेव ऐसे अवलम्ब बन गये थे, जिन्होंने उसको चिन्ताओं और तनावों से पूरी तरह मुक्त करके ईश्वर-साक्षात्कार का मार्ग अपने गुरु के माध्यम से ही दिखा दिया था।

अपने आश्रम आगमन में हरेक बार वह अपने गुरुदेव की पाद-पूजा करने का सौभाग्य पा जाती थी और उसके यह आगमन शीघ्र और बार-बार होते रहते थे। इस प्रकार पाद-पूजा के माध्यम से वह अपनी 'मैं' और बच्चों में ममत्व को जीतने में सफल हो पायी थी। वह हमें बताया करती थी कि गुरु के प्रति अप्रतिबन्धित (बिनाशर्त) समर्पण ही ईश्वरानुभूति का सबसे अधिक सुनिश्चित उपाय है। इसी प्रकार गुरुदेव के सान्निध्य में होने वाले सायंकालीन सत्संग में उसे भक्ति-संगीत के माध्यम से गुरु के प्रति भक्ति-भाव अभिव्यक्त करने का साधन मिला। हम बच्चों को भी गुरुदेव ने प्रेरणा दी कि हम अपने-अपने ढंग से रुचि अनुसार स्वयं को अभिव्यक्त करें। जहाँ तक मेरा प्रश्न है, मैं वाद-विवाद के माध्यम से ऐसा करता था, जिसके लिए उन्होंने मुझे 'प्रसंग-प्रवीण' की उपाधि दी।

शिवानन्द वाणी की पुस्तक 'चिल्ड्रन'स शिवानन्दा' (बालकों के शिवानन्द) में अपने गुरु के प्रति भक्ति की अत्यन्त द्रवित कर देने वाली सशक्त अभिव्यक्ति है, जिसमें बहुत सरल भाषा में गुरुदेव के सन्देश सम्पुटित किये गये हैं। इस पुस्तक में कथारूप में गुरुदेव के ही सन्देशों को बालकोंह्न्ह्नजो कि गुरुदेव के अनुसार भगवान् एवं भगवत्ता के

ही संचित कोष होते हैंह्नह्नको पुनः कहा है। लगभग दो दशकों के समय में उसके द्वारा गुरुदेव को लिखे गये अनेक पत्रों के उत्तर वास्तव में अपने-आपमें भक्ति एवं दर्शन का ऐसा ग्रन्थ हैं जिनमें गुरु और परमात्मा का ऐक्य स्वयं में दृष्टिगोचर हो जाता है। बाद में गुरुदेव के आशीर्वाद से माँ लगभग अकेली ही 'अमर कालोनी, दिल्ली' में शिवानन्द भवन का निर्माण, आने वाली पीढ़ियों के लिए गुरुदेव के मन्दिर के रूप में करवा पायी ताकि वे सब सद्‌गुण, पवित्रता, सेवापरायणता, दिव्य एवं ज्ञान सम्पन्न जीवन जी सकें।

जब कभी भी गुरुदेव का (दूरसंवेदी) टेलिपैथिक सन्देश मिल जाता, माँ तत्काल आश्रम की ओर दौड़ती। अन्त में सम्भवतया उसके मन में भीतर गहरे तक, अपने गुरु के और अधिक निकट रहते हुए और अधिक अर्थात् पूरी तरह से सेवा करने की चाह थी। गुरुदेव भगवान् के उन विशेष सन्देशवाहको में से एक थे जो यह सेवा, प्रेम, दान, पवित्रता और ध्यान के लिए ही जन्म ले कर आये थे। ऐसी सहस्रों शिवानन्द वाणियाँ और उनकी सन्तानें थीं जिन्हें गुरुदेव ने निराशा, अवसाद, निरुद्देश्यता और हताशा से उठा कर प्रकाश, ज्ञान, आशा और जीवन जीने का सही उद्देश्य प्रदान किया।

शिवानन्द वाणी, जिनकी जन्म शताब्दी हम १७ अगस्त २०१४ को मनाने जा रहे हैं, सार-तत्त्व में उस गुरु के प्रति श्रद्धा, भक्ति, संवेदना, प्रेम और समर्पण का निचोड़ थी, जिनके आशीर्वाद हम-परिवार के लिए जीवन में आज और सदा के लिए आवाहन करते हैं। अपने गुरु के प्रेरणाप्रद निर्देशन के बिना उसका जीवन अधूरा था। उसकी स्मृति के प्रति हमारी सर्वोत्तम श्रद्धांजलि यह होगी कि हम आध्यात्मिक ज्ञान की जिज्ञासा की ज्योति प्रज्वलित रखते हुए गुरुदेव के सन्देशों को आज के बालकों तक पहुँचाते रहें।

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

वंशी-वादन

वंशी प्रणव-ॐ का प्रतीक है। इसी वंशी-बाँसुरी की मधुर ध्वनि ने तो प्रेमविरहिणी प्रेमलीन व्रज-युवतियों को प्रेमास्पद भगवान् श्रीकृष्ण के दर्शनार्थ आमन्त्रित कर पतितपावनी, पुण्यतोया यमुना-तट की ओर आकर्षित किया था। इस दिव्य मुरली की मधुर तान के कारण ही उन गोपियों के हृदयों में आनन्द हिलोरें मारता और उनमें नवजीवन तथा प्रसन्नता एवं उत्साह का संचार होता था। बाँसुरी का मधुरातिमधुर संगीत सभी प्राणियों में भगवदीय-प्रेमोन्माद उत्पन्न करता तथा सभी प्राणी दिव्य-आनन्द-सागर में डुबकियाँ लगाते। इसे श्रवण कर जड़ जगत् में जीवन संचार हो जाता था, अर्थात् जड़ चेतन एवं चेतन जड़ हो जाता था। इस वंशी-वादन दिव्य तान की मधुरता अतुलनीय थी। जिसने भी श्रीकृष्ण की वंशी की तान एक बार सुन ली, उसे न तो स्वर्ग के अमृत की, न ही मोक्ष के आनन्द-प्राप्ति की कामना रही।

श्रीकृष्ण के प्रति उनका प्रेम दिव्य था ही। यह तो था आत्माओं का मिलन। संसारी स्त्री-पुरुष का लौकिक मिलन नहीं था। यौन सम्बन्ध की गन्ध तो लेशमात्र भी न थी। यहाँ तो थी जीवात्मा की परमात्मा में लीन होने की उत्कण्ठा। यही तो है जीवात्मा का परमात्मा से एकीकरण।

विश्व (ब्रह्माण्ड) में यह मानव-शरीर भी तो भगवान् श्रीकृष्ण की वंशी ही तो है। यदि आप अहंकार का नाश कर, पूर्णतया शरणागत हो कर अनन्य भाव से आत्म-निवेदन करोगे तो भगवान् आपकी शरीर रूपी वंशी से मधुर तान निकाला करेंगे। जब आपकी इच्छा का उनकी रुचि में विलय हो जायेगा तब आपकी इन्द्रियाँ, मन तथा शरीर द्वारा उनकी ही इच्छा निर्विरोध रूप से कार्य किया करेगी, आपकी सारी चिन्ताओं और दुःखों का नाश हो जायेगा और आप पूर्ण शान्ति का आनन्दोपभोग करेंगे, शान्ति में ही संस्थित हो जायेंगे।

स्वामी शिवानन्द

जातक कथाएँ-१

अपनी सम्पत्ति दूसरों के लिए होती है

(स्वामी रामराज्यम्)

बच्चो, इस अंक से हम तुम्हारे लिए प्रारम्भ कर रहे हैं कहानियों की एक नयी शृंखला। इन कहानियों को हमने नाम दिया है 'जातक कथाएँ'। जातक का अर्थ है भगवान् बुद्ध के पूर्वजन्म। जातक कथाएँ भगवान् बुद्ध के पूर्वजन्मों की कथाएँ हैं। अपने पूर्वजन्मों में भगवान् बुद्ध त्याग, सेवा, करुणा, प्रेम आदि से परिपूरित अनेकानेक सत्कर्म किया करते थे। तब वह बोधिसत्त्व के नाम से जाने जाते थे (वह अपने माता-पिता के द्वारा दिये गये नामों से भी जाने जाते थे)। 'बोधि' शब्द का अर्थ होता है बुद्धत्व। बुद्धत्व का अर्थ है जागरूक यानी ज्ञानी होने की अवस्था। 'सत्त्व' का अर्थ है प्राणी। इस प्रकार 'बोधिसत्त्व' का अर्थ हुआ बुद्धत्व की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करने वाला प्राणी। अनेकानेक सत्कर्म करते रहने के कारण बोधिसत्त्व अपने अन्तिम जन्म में बुद्धत्व को प्राप्त हो कर बुद्ध कहलाये।

इन कहानियों को पढ़ कर तुम बोधिसत्त्व की तरह सत्कर्म करने में रत हो जाना। फिर, तुम भी बुद्धत्व को प्राप्त हो कर अज्ञान, लोभ, मोह आदि की निद्रा से जाग जाओगे और दूसरों को भी जगाओगे।

भगवान् बुद्ध अपने एक जन्म में अविषह्य नाम से जाने जाते थे। वह अत्यन्त धनी थे। दूसरों की आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए अपने धन को पानी की तरह बहा देने में उन्हें तनिक भी संकोच नहीं होता था। कोई याचक उनके द्वार से खाली हाथ लौट जायेह्यह्ययह बात उन्हें असह्य थी।

एक सुबह वह उठे, तो उन्होंने देखा कि उनके घर की सभी वस्तुएँ चोरी चली गयी हैं। चोरों ने घर में कुछ भी नहीं छोड़ा था। वह चिन्तित हो गये। इस बात की उन्हें चिन्ता नहीं थी कि उनकी सम्पत्ति चली गयी। उन्हें इस बात की चिन्ता थी कि अब उनके द्वार से याचक खाली हाथ लौटेंगे। वह गुमसुम बैठे यही सोच रहे थे कि उनकी दृष्टि घर के एक कोने में गयी। जल्दी में चोर एक हँसिया और रस्सी का एक टुकड़ा छोड़ गये थे। उन्होंने मन ही मन कोई योजना बना ली। उनके चेहरे पर सन्तोष झलकने लगा।

उसी दिन वह हँसिया और रस्सी ले कर जंगल में चले गये। शाम को लोगों ने देखा कि एक दिन पहले तक जो अपार धन के स्वामी थे, वह अविषह्य सिर पर घास का बोझा लादे हुए जंगल से वापस लौट कर हाट (बाजार) की ओर जा रहे थे।

हाट से वह लौटे और घास बेच कर मिले हुए पैसों को उन्होंने नित्यप्रति आने वाले याचकों को बाँट दिया। उनके चेहरे पर प्रसन्नता का भाव झलकने लगा।

अब अविषह्य नित्य ही जंगल से घास काट कर लाते और उसे बेच कर जो धन मिलता, उसे याचकों को दे देते। याचकों को देने के बाद यदि कुछ धन बच जाता, तो उससे वह अपनी आवश्यकताएँ पूरी करते। कभी-कभी अपना पेट भरने के लिए उनके पास कुछ भी नहीं बचता था। जब कोई भूखे अविषह्य के पास सहानुभूति प्रकट करने के लिए आता

था, तब वह कहते थेह्नह्न''मेरा जन्म अपना पेट भरने के लिए नहीं, दूसरों की आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए हुआ है।'' स्वयं भूखे रह कर भी वह कभी दुःखी नहीं हुए।

बच्चो, अपनी सम्पत्ति वस्तुतः दूसरों के लिए होती है। अपनी सम्पत्ति के उतने ही अंश पर अपना अधिकार होता है जिसकी आवश्यकता दूसरों को नहीं होती। अपने ऊपर कोई संकट आ जाये, तो उस संकट में अपने कष्ट को दूर करने से भी अधिक महत्त्वपूर्ण यह बात लगनी चाहिए कि हम दूसरों के लिए कुछ कर पा रहे हैं कि नहीं।

नोट : कुछ विद्वानों के अनुसार दाताओं में श्रेष्ठ तथा अत्यन्त धनी अविषह्य की दानवृत्ति की परीक्षा लेने के लिए एक हँसिया और रस्सी का एक टुकड़ा छोड़ कर उनकी सारी सम्पत्ति को देवताओं के राजा इन्द्र ने छिपा दिया था। फिर भी जंगल में घास काट कर और बाजार में उसे बेच कर मिले हुए किंचित् धन से अविषह्य याचकों को दान देते रहे। तब इन्द्र ने अन्तरिक्ष में प्रकट हो कर उनसे कहाह्नह्न''आप बिलकुल निर्धन हो गये हैं। आपके ऊपर यह विपत्ति दान देते रहने के कारण आयी है। यदि आप दान देना छोड़ दें, तो आप पुनः पहले की तरह धनवान् हो जायेंगे। धन के अभाव में यदि आप दान न दें, तो इसमें हानि की क्या है? दान देना धनपतियों के लिए उचित है, न कि इस दुर्दशा में पड़े हुए आपके लिए।''

अविषह्य ने उत्तर दियाह्नह्न''आप मुझे दान न देने की शर्त पर पूर्ववत् धनवान् हो जाने का आश्वासन दे रहे हैं। परन्तु ऐसे धन का क्या उपयोग है जिससे दुःखी याचकों को प्रसन्न न किया जा सके। अत्यन्त कष्ट में होते हुए भी किसी याचक को 'नहीं है' कह कर मैं उस पर वज्रपात नहीं करना चाहता। मेरी विनती है कि आप मुझे दान न देने का परामर्श न दें।''

अविषह्य के ये वचन सुन कर इन्द्र बोलेह्नह्न''मैं आपकी परीक्षा ले रहा था। आपके अनमोल विचारों से मैं अति सन्तुष्ट हूँ। आप याचकों पर दान की वर्षा करते रहें। आपका धन कभी क्षीण नहीं होगा।''

यह कह कर इन्द्र ने उनकी सारी सम्पत्ति उन्हें लौटा दी।

सेवा करें, प्रेम करें, दान दें

ओछे तथा सम्मान-प्राप्त कार्यों में विभेद न लायें। यदि कोई आदमी अपने शरीर के किसी हिस्से में तीव्र वेदना का अनुभव कर रहा हो, तो उसके उस पीड़ित भाग को धीरे-धीरे दबाइए। ऐसा अनुभव कीजिए कि आप रोगी के शरीर में भगवान् की सेवा कर रहे हैं। अपने इष्ट-मन्त्र का भी जप कीजिए। यदि आप सड़क के किनारे किसी मनुष्य अथवा किसी जानवर के शरीर से रुधिर प्रवाहित होते देखें, तो अपनी कमीज के ऊपरी हिस्से में से कुछ कपड़ा फाड़ कर उसके घाव पर पट्टी बाँधिए। रेलवे-स्टेशन पर गरीब कुलियों के साथ किसी भी प्रकार का झगड़ा आदि न कीजिए। उदार तथा दानशील बनिए। सदा अपनी जेब में कुछ पैसे रखिए तथा उनको गरीबों और असहायों में बाँट दीजिए।

हृदय के शुद्ध होने पर मन स्वतः ही ईश्वर की ओर लग जायेगा। शुद्ध प्रेम, आत्मार्पण तथा उपासना के द्वारा अन्ततः यह ईश्वर में ही विलीन हो जाता है। **-स्वामी शिवानन्द**

७७ वें बेसिक योग–वेदान्त कोर्स का समापन समारोह

७७ वें बेसिक योग–वेदान्त कोर्स का समापन समारोह २९ जून २०१४ को 'योग–वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी के 'हॉल' (व्याख्यान महाकक्ष) में 'द डिवाइन लाइफ सोसायटी' मुख्यालय के उपाध्यक्ष, परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज की पावन उपस्थिति में हुआ।

प्रारम्भिक प्रार्थनाओं के उपरान्त एकाडेमी के कुल–सचिव, श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज ने उपस्थित श्रोताओं का स्वागत किया तथा श्री स्वामी अखिलानन्द जी महाराज ने 'कोर्स' की 'रिपोर्ट' पढ़ी। उसके उपरान्त विद्यार्थियों ने कोर्स के सम्बन्ध में अपने भाव एवं अनुभव व्यक्त किये। फिर विद्यार्थियों को प्रमाण–पत्र एवं ज्ञान–प्रसाद दिया गया तथा प्राध्यापक–वर्ग को सम्मानित किया गया।

परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज ने अपने विदाई–आशीर्वचन में विद्यार्थियों को सद्गुरुदेव के 'बीस आध्यात्मिक नियमों' को तथा उनके दिव्य आदर्श–वाक्यह्वह्व'भले बनो; भला करो' को अपने–अपने जीवन में उतारने की प्रेरणा दी। सरस्वती पूजा एवं प्रसाद वितरण सहित कार्यक्रम समाप्त हुआ।

परम पिता परमात्मा तथा सद्गुरुदेव की अपार कृपा–वृष्टि सब पर हो!

* * *

गहम, अनगुल (ओडिशा) में 'चिदानन्द सैन्टेनरी चैरिटेबल डिस्पेंसरी' के माध्यम से सेवा–कार्य

'द डिवाइन लाइफ सोसायटी', शिवानन्द सेवाग्राम धर्मार्थ ट्रस्ट (अनगुल जिले की द डिवाइन लाइफ सोसायटी शाखाओं द्वारा प्रबन्धित) के द्वारा जून माह में इस डिस्पेंसरी में ७२२ निर्धन रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा की गयी। रोगियों का निरीक्षण एवं औषधियों सहित उपचार डा. आर. एन. पंडा तथा डा. आर. सी. सत्पथी द्वारा किया गया।

सर्वशक्तिमान् परमात्मा तथा सद्गुरुदेव के आशीर्वाद सब पर हों!

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

सद्गुरुदेव की अपार कृपा से और श्री स्वामी जी महाराज के गहन आशीर्वाद से, लक्ष्मणझूला के निकट तपोवन में स्थित अपने ही एक अंग 'शिवानन्द होम' के माध्यम से अपनी विनीत सेवा में 'द डिवाइन लाइफ सोसायटी' सतत संलग्न है।

'शिवानन्द होम' न तो एक चिकित्सालय है, न यह 'उपचार-गृह है' न ही वृद्धाश्रम है। इसकी परिभाषा न कुष्ठ चिकित्सालय के रूप में की जा सकती है, न ही यह तपेदिक चिकित्सालय अथवा मानसिक रोगियों का आश्रय-स्थल (पागलखाना) है। 'शिवानन्द होम' सर्वप्रथम एक गृह अथवा 'घर' है। यह उन लोगों के लिए 'घर' है जिनके लिए जीवन की अत्यन्त संकटकालीन परिस्थिति के समय कोई घर नहीं है। और जीवन के उस मोड़ पर उनको घर की अत्यधिक आवश्यकता होती है, क्योंकि वे भयंकर रोग या कष्ट से प्रभावित होते हैं, ठुकरा दिये गये अथवा दुत्कार दिये गये होते हैं, एकाकी, पूर्णतया दिशाहीन, सड़क के किनारे रह रहे हुएह्लह्लकुछ समय से अथवा लम्बे समय से ऐसी ही परिस्थिति में रह रहे इन लोगों में प्राय: सभी रोगी होते हैं; सभी किसी-न-किसी रोग से ग्रसित होते हैं, कारण भले ही कुछ भी रहा होह्लह्लस्वच्छ पेय जल अथवा स्वच्छ एवं उचित भोजन का अभाव, शिर पर छत न होना, चिकित्सीय देख-रेख न मिल पाना और कोई भी निर्भर कर सकने वाला सहारा न होना, इत्यादि-इत्यादि। अधिकांश रोगी शारीरिक रूप से दयनीय अवस्था में भरती किये जाते हैंह्लह्लगन्दगी से भरे हुए, जुओं से घिरे हुए, त्वचा रोग, कृमि संक्रमण, रक्ताल्पता, दमा, एड्स, मानसिक रोग, हृदय रोग, मधुमेह, हड्डियों के रोग, मस्तिष्क के अथवा अन्य किसी-न-किसी रोग से ग्रस्त होते हैं। सभी रोगियों का निरीक्षण-परीक्षण करके आवश्यकतानुसार उपचार किया जाता है।

डाक्टरी चिकित्सा के साथ-साथ बहुत से रोगियों को उपचर्या की, देख-रेख की, निर्देशन की अथवा सहारे की आवश्यकता रहती है और बहुतों को तो अपने दैनिक कार्य-कलापों के लिए दूसरों पर पूरी तरह निर्भर करना पड़ता है; क्योंकि उन्हें 'क्या कहाँ है' का ही स्मरण नहीं रहता। यहाँ थोड़ी देर के लिए और दीर्घ अवधि के लिए रहने वालेह्लह्लदोनों ही प्रकार के लोग हैं। गुरुदेव की करुणा ने उन सबको यहाँ भेजा है, नहीं, नहीं, हम सभी को एक-साथ वे अपनी छत्रछाया में ले आये हैं, एक-दूसरे की देख-भाल करने या करवाने के लिए! हम सब अन्तत: उस परमात्मा के रोगी ही तो हैं, 'शिवानन्द होम' उन परमात्मा के निर्देशन में 'उनके' सेवकों के द्वारा, वैतनिक कर्मचारियों द्वारा, सहायकों द्वारा और उनके द्वारा कार्यरत जिन्हें इसे 'घर बनाने वाले' कहा जा सकता है। यह सब 'गृह-निर्माता' दीर्घकालीन आवासी, अन्तेवासी, मिला कर 'होम' का आधार, एक तन्त्रिकीय सम्बन्ध बनाते हैं। एक सामान्य घर में भी कितनी सहस्रों अदृश्य, अलक्षित गतिविधियाँ चलती रहती हैं? 'शिवानन्द होम' में भी बहुत से गृह-निर्माता हैं। इन्हें आप घरेलू महिलाओं और पुरुषों का एक समूह कह सकते हैं जो इन सब सहस्रों अदृश्य एवं अलक्षित गतिविधियों को इस भाव से निभाते हैं कि उसके बिना यह 'घर' न बन कर कर केवल एक भवन या मकान मात्र ही रह जाता है। उन्होंने एक घर खोया और दूसरा घर प्राप्त कर लिया, अब येह्लह्लउनके दु:ख-दर्द को इस प्रकार समझते हुए, जैसा अन्य कोई नहीं समझ सकताह्लह्लउनके लिए इसे 'घर' बना रहे हैं।

इस माह बहुत से नये रोगी आये हैंह्लह्लसंक्रामक घावों के रोगी, आन्त्र ज्वर के रोगी, त्वचा रोग, दमा से ग्रस्त रोगी तथा एक रोगी गिर जाने के कारण आयी शिर में चोट से प्रभावित है। गुरुदेव के रोगहर आशीर्वाद और श्री स्वामी जी महाराज की करुणामयी दृष्टि का स्पर्श इन सभी को प्राप्त हो! ॐ श्री सद्गुरुदेवाय नम:!

''हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें। तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें। सदा तुम्हारा ही स्मरण करें। सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें। तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो। सदा हम तुममें ही निवास करें।''

स्वामी शिवानन्द

MEMBER SHIP

डी एल एस शाखाओं के प्रतिवेदन

अन्तर्देशीय शाखाएँ

अम्बाला (हरियाणा): नियमित रविवार के सत्संगों में महामृत्युंजय मन्त्र जप, कीर्तन, स्वाध्याय गुरुदेव की पुस्तकों में से, तथा आरती की गयी; प्रत्येक द्वितीय रविवार को वीडियो सत्संग हुआ; मंगलवारों को हनुमान चालीसा, संकट मोचन, बजरंग बाण, कीर्तन एवं आरती। निःशुल्क होमियोपैथी चिकित्सा एवं जल सेवा चलती रही।

आस्का (ओडिशा): रविवारों एवं गुरुवारों के नियमित सत्संगों के अतिरिक्त भक्तों के घर चल सत्संग (कुल ५) भी हुए। ९ मई को एक साधना शिविर आस्का में तथा २२ जून को एक भेटानी गाँव में किया गया जिसमें ३०० से अधिक भक्त सम्मिलित हुए; ज्ञान प्रसाद तथा गुरुदेव एवं गुरुमहाराज के चित्र वितरित किये गये। निःशुल्क मेडिकल सेवा इन दोनों अवसरों पर दी गयी।

बरगढ़ (ओडिशा): गुरुपाद पूजा, अभिषेक, स्वाध्याय, एवं योगासन नियमित रूप से चलते रहे। होमियोपैथी चिकित्सा द्वारा १५० रोगियों का उपचार तथा महत्वाणी का वितरण निःशुल्क किया गया। १४ जून को श्रीमद्भागवत का (११ वें स्कन्ध पर) प्रवचन हुआ।

बेलागुंठा (ओडिशा): दैनिक प्रातः पादुका पूजा, रविवारों को गीता के १८ वें अध्याय का पारायण; मंगलवार को रामायण पाठ, गुरुवार को सत्संग, संक्रान्ति को मासिक साधना दिवस तथा 'शिवानन्द दिवस' पर विशेष सत्संग इस मास की नियमित गतिविधियाँ रहीं।

बल्लारि (कर्नाटक): शाखा में १९ जून को स्वामी देवानन्द जी महाराज के जन्मदिवस पर सत्संग, अर्चना और पूजा की गयी।

बीकानेर (राजस्थान): शाखा की नियमित गतिविधियों में प्रातः-सायं महादेव मन्दिर में पूजा, रविवार को साप्ताहिक सत्संग, योगासन एवं प्राणायाम सत्र; १ जून (गुरुदेव के संन्यास दिवस) को पादुका पूजा, निर्जला एकादशी को कीर्तन तथा भक्तों के घरों में सुन्दरकाण्ड पाठ (कुल २) किये गये। २४ जून को महामृत्युंजय और गायत्री हवन; निर्धन एवं मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति तथा ज्ञान प्रसारण हेतु पुस्तकालय की सुविधा। स्वामी चिदानन्द जन्म शताब्दी के एक भाग के रूप में रुद्री अभिषेक, पंचाक्षरी मन्त्र कीर्तन २ जून से ८ जून तक। २ से ८ मार्च तक भागवत कथा और उसके बाद शोभा-यात्रा एवं विशाल भण्डारा ९ मार्च को किया गया।

बुगुडा (ओडिशा): जनवरी से मार्च तक के समय में शाखा द्वारा प्रत्येक गुरुवार को सत्संग, संक्रान्ति दिवसों पर विशेष सत्संग (कुल ३) तथा ५ चल सत्संग हुए; महाशिवरात्रि को पादुका पूजा तथा अर्चना की गयी।

छत्रपुर (ओडिशा): दैनिक सायंकालीन सत्संग के अतिरिक्त शाखा द्वारा ४ साप्ताहिक तथा १२ विशेष सत्संग हुए। शिवानन्द और चिदानन्द दिवसों पर पादुका पूजा; ५० सुन्दरकाण्ड पाठ करने का लक्ष्य जून में पूर्ण हुआ तथा स्वामी चिदानन्द जन्म शताब्दी उत्सव के अंग में अभी और पाठ इसी प्रकार करने की योजना बनायी गयी।

कॉलेज स्क्वेयर, आस्का (ओडिशा): नियमित साप्ताहिक सत्संग के अतिरिक्त शिवानन्द दिवस और चिदानन्द दिवस (प्रत्येक ८ और २४ को) पर पादुका पूजा एवं सुन्दरकाण्ड पाठ किये गये।

दिगपहंडी (ओडिशा): शाखा द्वारा प्रत्येक गुरुवार एवं रविवार को सत्संग, गुरुपादुका पूजा प्रत्येक ८ और २४ को तथा विशेष सत्संग संक्रान्ति को हुए; २६ मई को भक्त के आवास पर सत्संग किया गया।

फरीदपुर (उत्तर प्रदेश): बुधवार को साप्ताहिक सत्संग चलता रहा। गुरुदेव संन्यास दीक्षा दिवस पर निर्धनों को भोजन एवं वस्त्र दान, दो निर्धन कन्याओं के विवाह के लिए वित्तीय सहायता तथा एक वृद्धा निर्धन रोगिणी को भी चिकित्सा के लिए वित्तीय सहायता दी गयी।

जयपुर (ओडिशा): दैनिक प्रातः-सायं पूजा के अतिरिक्त रविवारों को साप्ताहिक तथा गुरुवारों को चल सत्संग; मास की ८ और २४ को हवन, पूजा और प्रसाद सेवन; आल इण्डिया रेडियो, जयपुर से श्री स्वामी परमप्रियानन्द जी का प्रवचन प्रसारित किया गया। कोरापुट जिला होमियोपैथी डिस्पेंसरी द्वारा ९०० से अधिक रोगियों का उपचार किया गया।

काकिनाडा (आन्ध्र प्रदेश): शिवानन्द क्षेत्रम् सर्पावरम् में प्रत्येक बुधवार को ध्यान, पारायण और प्रवचनों सहित सत्संग, शुक्रवार को 'जैड-टाउन' काकिनाडा में, शनिवार को 'रिज़र्व क्वार्टर्ज़, काकिनाडा में तथा रविवार को साईं मन्दिर, माधवपत्तनम् में सत्संग होते हैं। मास के प्रथम और तृतीय रविवार को निःशुल्क मेडिकल शिविर तथा प्रत्येक रविवार को सर्पावरम् में २५ से ३० निर्धनों को 'नारायण सेवा'; १२ जून को काकिनाडा के गाँव पावसपांडु में भगवद्गीता पाठ (१८ अध्याय सम्पूर्ण) हुआ। १८ जून को सर्पावरम् में विदेश से आये हुए एक पुराने भक्त के द्वारा संकीर्तन तथा १९ जून को श्री स्वामी देवानन्द जी महाराज का जयन्ती उत्सव मनाया गया।

कानपुर (उत्तर प्रदेश): दैनिक प्रात:-सायं आरती, भजन और संकीर्तन, प्रत्येक एकादशी को और मासिक सत्संग सुन्दरकाण्ड पाठ सहित होता रहा।

खातिगुडा (ओडिशा): १ जून को नारायण सेवा सहित सत्संग; दोनों एकादशियों को विष्णुसहस्रनाम पारायण सहित सत्संग तथा २४ जून को भक्त के घर सत्संग, इस मास की गतिविधियाँ रहीं।

महिला शाखा, इम्फाल (मणिपुर): गुरुपूर्णिमा को गुरुपादुका पूजा, भजन-कीर्तन एवं प्रसाद वितरण किया गया। २६ फरवरी को ऋषिकेश आश्रम के एक संन्यासी की उपस्थिति में एक दिवसीय आध्यात्मिक गोष्ठी हुई; वक्ताओं ने 'वर्तमान समय में आध्यात्मिक जागरूकता की आवश्यकता' विषय पर वक्तव्य दिये, फिर भजन-कीर्तन हुआ। एकादशी एवं अमावस्या दिवसों पर नियमित सत्संग चलता रहा।

महिला शाखा, सुनाबेडा (ओडिशा): दैनिक प्रात: संकीर्तन, साप्ताहिक सत्संग एवं बाल सत्संग रविवारों को, नारायण सेवा मंगलवार को, अभिषेक और विष्णुसहस्रनाम पाठ एकादशी को तथा महामृत्युंजय मन्त्र जप 'चिदानन्द दिवस' को, शाखा की नियमित गतिविधियाँ रहीं; १ जून को साधना दिवस आयोजित किया गया।

लखीमपुर-खेरी (उत्तर प्रदेश): साप्ताहिक सत्संगों में जय गणेश कीर्तन, गुरु स्तोत्र, भगवद्गीता पाठ, महामन्त्र जप, गुरुदेव की पुस्तक में से स्वाध्याय तथा विश्व-प्रार्थना एवं शान्ति-पाठ सहित सत्संग की समाप्ति की जाती रही।

लाँजीपल्ली (ओडिशा): नित्य दिन में दो बार पूजा और आरती, भगवद्गीता एवं रामायण पाठ के अतिरिक्त रविवार को साप्ताहिक सत्संग नियमित रूप से होते रहे; २९ जून (रथ-यात्रा दिवस) को साधना दिवस नारायण सेवा एवं प्रसाद वितरण सहित हुआ। श्रीजगन्नाथ महाप्रभु पर विचार-गोष्ठी भी की गयी। सभी कार्यक्रमों का स्थानीय समाचार-पत्र एवं रेडियो-टीवी पर प्रसारण हुआ।

लखनऊ (उत्तर प्रदेश): जून माह में शाखा द्वारा दो सत्संग, जयगणेश कीर्तन, भजन, भगवद्गीता पाठ, आरती एवं भोग सहित किये गये। २७ जून को नेत्रहीन बालकों की 'नेशनल एसोसिएशन फॉर ब्लाइंड' संस्था में मिठाइयाँ बाँटी गयीं।

लुधियाना (पंजाब): अप्रैल से जून मास तक मासिक सत्संग नियमित रूप से होते रहे। १६ से २० अप्रैल तक पाँच दिवसीय योग साधना शिविर किया गया जिसमें प्रात: योगासन कक्षाएँ तथा सायंकाल में सत्संग हुआ। मुख्यालय आश्रम के एक सन्त इसमें सम्मिलित हुए। नियमित योगासन कक्षाएँ 'ऋषिनगर वेलफेयर सोसायटी' के सक्रिय सहयोग से चल रही हैं। निकटवर्ती विद्यालय के निर्धन बच्चों में कापियाँ, ज्योमिति के डिब्बे इत्यादि बाँटे गये।

महासमुन्द (छत्तीसगढ़): प्रात:कालीन योगासन-प्राणायाम सत्र, पूजा और भजन पूर्ववत् चलते रहे। नवरात्रि उत्सव में रामायण पाठ, देवीसूक्तम्, दुर्गा पाठ इत्यादि नौ दिनों तक हुआ। मंगलवारों को हनुमान चालीसा पाठ तथा रविवारों को गीता पाठ नियमित रूप से किये गये।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): प्रात:-सायं सत्संग, गुरुवारों को चल सत्संग शनिवारों को और एकादशियों को मातृ सत्संग नियमित गतिविधियाँ रहीं। ३ मई को ६ घण्टे का महामन्त्र कीर्तन; ३ से ९ मई तक आवासीय युवा शिविर, जिसमें नित्य जप, आसन, प्राणायाम, प्रवचन, सुन्दरकाण्ड पाठ इत्यादि प्रतिदिन हुए, कुल तीन सत्र नित्य किये गये। १० से २३ मई तक हवन किये गये। जून मास में नियमित गतिविधियों के अतिरिक्त दो विभिन्न स्थानों (जबलपुर) में १ जून को विशेष सत्संग हुए, २३ जून को भी बालाभात (मध्य प्रदेश) में विशेष सत्संग किया गया।

नीमापाड़ा (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक प्रात:कालीन पादुका पूजा तथा गुरुवारों को साप्ताहिक सत्संग के अतिरिक्त २१ अप्रैल और ११ मई को विशेष सत्संग हुए; तरडापदा गाँव में एक विशेष सत्संग में भजन-कीर्तन, भगवद्गीता पाठ, आरती, शान्ति-पाठ एवं प्रसाद सेवन; ८ अप्रैल श्री राम नवमी एवं १५ को हनुमान जयन्ती पर १०८ हनुमान चालीसा पाठ; २ से ८ मई तक भागवत सप्ताह 'स्वामी चिदानन्द शताब्दी महोत्सव' के उपलक्ष्य में किया गया।

पंचकुला (हरियाणा): रविवारों को साप्ताहिक सत्संग एवं दैनिक योग कक्षाओं के अतिरिक्त विद्यार्थियों के लिए ७ दिवसीय योग शिविर जिसमें विद्यार्थियों ने योग, संगीत, नृत्य और कला का प्रशिक्षण प्राप्त किया; २० बच्चों का समूह माता-पिता गोधाम गया और वहाँ श्रमदान किया।

पटियाला (पंजाब): भक्तों के आवास पर चल सत्संग पूर्ववत् चलता रहा। ३ मई को विशेष सत्संग जिसमें ऋषिकेश के एक सन्त शाखा में आये; शाखा द्वारा प्रति मास स्थानीय गौशाला को दान दिया जाता रहा।

रायगढ़ (छत्तीसगढ़): प्रत्येक सोमवार को साप्ताहिक सत्संग के अतिरिक्त शाखा द्वारा ८ अप्रैल को रामनवमी एवं शिवानन्द दिवस तथा ८ से १५ अप्रैल तक हनुमान जयन्ती मनायी गयी।

राजा पार्क, जयपुर (राजस्थान): शाखा की नियमित गतिविधियों में दैनिक सायंकालीन सत्संग, सोमवारों को महिला

सत्संग, महामृत्युंजय जप गुरुवारों को, सुन्दरकाण्ड एवं हनुमान चालीसा शनिवारों को तथा प्रात:कालीन सत्संग प्रत्येक रविवार को किये जाते रहे। २७ निर्धन विधवाओं तथा एक मानसिक विकलांग व्यक्ति को १५० रुपये प्रति व्यक्ति मासिक धनराशि दी गयी। प्रत्येक रविवार को सिद्धेश्वर मन्दिर में ३०० के लगभग निर्धनों में भोजन वितरण, गरीबदास कुष्ठ रोगाश्रम में दाल, चावल, चीनी, चाय एवं तेल इत्यादि राशन कुष्ठरोगियोंह्नको; १८८९ पुस्तकों कीा सुविधा पुस्तकालय द्वारा तथा नि:शुल्क होमियोपैथी उपचार भी शाखा द्वारा किया जाता है। नि:शुल्क योगासन कक्षा नित्य प्रात:, शीतल शुद्ध पेय जल की कुटिया का प्रबन्ध भी किया गया है। संन्यास दीक्षा दिवस पर सत्यनारायण एवं पूर्णिमा कथा की गयी, ८ जून को गंगादशहरा मनाया गया तथा २२ जून को शाखा के पदाधिकारियों का चुनाव किया गया।

राजकोट (गुजरात): ३० जून तक के तीन मास की गतिविधियों मेंह्नह्नरविवारों को शिवानन्द भवन में तथा शनिवारों को नीलकण्ठ महादेव मन्दिर में सत्संग, रामनवमी को अर्ध दिवसीय शिविर, शिवानन्द उद्यान में नित्य महिलाओं की योगासन कक्षा, सप्ताह में तीन दिन नि:शुल्क होमियोपैथी उपचार द्वारा १९०० रोगियों तथा नि:शुल्क दन्त चिकित्सालय द्वारा १३७ रोगियों का उपचार जिसमें ४५०० रुपये की बत्तीसियाँ १३७ रोगियों को लगायी गयीं। जलाराम मन्दिर, ग्रीनफोर्ड, यू. के. सहयोग से नेत्र शिविर के आयोजन से ४७२६ रोगियों का उपचार तथा सौराष्ट्र हॉस्पिटल में ६७३ रोगियों की शल्य चिकित्सा हुई। हृदय रोगियों और कैंसर रोगियों को २४,००० रुपये की वित्तीय सहायता भक्तिनगर रेलवे स्टेशन को स्ट्रेचर के लिए १५,००० रुपये की सहायता; १५,००० रुपये निर्धन विद्यार्थियों की कापियों तथा अन्य सामग्री हेतु तथा ९ वीं कक्षा के ३३ कमजोर विद्यार्थियों के लिए अध्यापन कक्षाओं का प्रबन्ध शाखा द्वारा किया गया।

राउरकेला (ओडिशा): शाखा की नियमित गतिविधियाँह्नह्नदैनिक प्रात:कालीन ध्यान, योगासन-प्राणायाम कक्षाएँ, रविवार को चल सत्संग, गुरुवार तथा प्रत्येक ८ और २४ को पादुका पूजा, अभिषेक एवं अर्चना, प्रत्येक रविवार को होमियोपैथी सेवा नि:शुल्क की गयी।

साउथ बलाण्डा (ओडिशा): शाखा की नियमित गतिविधियाँह्नह्नप्रात:-सायं पूजा, शुक्रवार को सत्संग, ८ और २४ को गुरुपादुका पूजा, महिला सत्संग एकादशियों को। विशेष गतिविधियाँह्नह्नसंक्रान्ति दिवस १५ और २८ जून को विशेष सत्संगों में विश्व-शान्ति एवं वैश्व भातृभावना हेतु अखण्ड महामन्त्र संकीर्तन किया गया।

स्टील टाउनशिप शाखा, राउरकेला (ओडिशा): प्रत्येक रविवार एवं २८ मई को भक्त के आवास पर सत्संग, प्रत्येक बुधवार को नि:शुल्क संगीत कक्षाएँ, प्रत्येक गुरुवार को पादुका पूजा तथा प्रत्येक शनिवार को स्वाध्याय सत्र शाखा की नियमित गतिविधियाँ रहीं।

सुनाबेडा (ओडिशा): प्रत्येक गुरुवार और रविवार को जप, कीर्तन, स्वाध्याय, पूजा एवं आरती सहित सत्संग, बुधवार और शनिवार को महिला सत्संग तथा महिलाओं द्वारा सावित्री व्रत किया गया।

सुरेन्द्रनगर (गुजरात): नित्य प्रात: पूजा तथा सायंकाल में मातृ सत्संग, शनिवार को सुन्दरकाण्ड पाठ तथा सोमवार को रामायण पर प्रवचन, युवा विधवाओं को सिलाई मशीनों एवं नकद धनराशि का गुप्त दान, शुद्ध पेय जल व्यवस्था ग्रीष्म ऋतु के लिए तथा बवासीर के रोगियों के लिए आयुर्वेदिक औषधि वितरित की गयी।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश): शाखा द्वारा २२ जून को वृद्धाश्रम में सत्संग किया गया।

वसन्त विहार (नई दिल्ली): शाखा का साप्ताहिक सत्संग ध्यान, स्वाध्याय (गुरुमहाराज की पुस्तकों में से), रामचरितमानस पाठ, भगवद्गीता पाठ, स्थानीय सन्तों द्वारा प्रवचन, विश्व-प्रार्थना एवं प्रसाद सेवन सहित चलते रहे तथा 'स्वामी चिदानन्द जन्म शताब्दी' के अन्तर्गत कार्यक्रम आयोजित करने के सम्बन्ध में एक गोष्ठी की गयी।

विदेशी शाखा

हांगकांग (चीन): शाखा की नियमित गतिविधियाँह्नह्नप्रत्येक शनिवार (दूसरे और अवकाश के दिन के अतिरिक्त) को चेउँग शा वान तथा 'नॉर्थ पौइंट योगा सेन्टर', दोनों स्थानों पर १ घण्टे का महामन्त्र जप; हनुमान चालीसा और उसके बाद गुरुदेव का एक प्रवचन 'नॉर्थ पौइंट योगा सेन्टर' पर १० जून को (३५ भागीदारों सहित) तथा 'प्रैक्टीकल गाइड टू योगा' के आधार पर प्राणायाम, योगासन और ध्यान कक्षाएँ पूर्ववत् चलती रहीं (३१६ भागीदारों की २७ नयी कक्षाएँ आरम्भ की गयीं)। शाखा द्वारा ३ मई को भजन अभ्यास का सत्र चलता रहा। हांगकांग शाखा की १४ वीं वर्षगाँठ ७ मई को, जिसके साथ ही वार्षिक सार्विक गोष्ठी हुई जिसमें एक वक्तव्य योगासन सत्र (इसमें योगासन प्रशिक्षकों ने ८९ भागीदारों सहित) आसन प्रदर्शित किये, फिर सदस्यों (कुल ८२) के लिए रात्रि-भोज हुआ। २४ मई को 'चेउँग शा वान तथा योगा सेन्टर' में एक विशेष भजन-कीर्तन तथा भगवद्गीता के सार पर प्रवचन किया गया (२९ भागीदार)। 'रक्तदान' कार्यक्रम 'हांगकांग रेडक्रास' में शाखा द्वारा चलता रहा। □ □ □